अगस्त-2015 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 3 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अगस्त-२०१५

दूर गगन में उड़े निरंकुश,
शुभ्र कपोत मनोहारी।
तोड़े सब पाशों के बन्धन,
मुक्त होय मानवता सारी।
सत्यार्थप्रकाश प्रेरक ग्रन्थ में,
ऋषि दयानन्द यही विचारी।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ४४

प्रकृति जैसी शुद्धता
हमारी पहचान
1 Shreshth Quality Uttam Swad Ad in 16 x 22 cms size.pdf
MDH
मसाले
असली मसाले सच – सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Chunky Chat masala
Kitchen King
Peacock Kasoori Methi
Pav Bhaji masala
Chana masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
श्रावण कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

अंतिम इच्छा ०६

ऋषि तर्पण– वेद रक्षा व्रत ग्रहण पर्व २१

August- 2015

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४	वेद सुधा
०६	आत्म-शुद्धि से प्रभु प्राप्ति
११	ऋषि दयानन्द के साहित्य ....
१२	१८वाँ भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
१३	१५ अगस्त २०१५ पर विशेष
१४	'भ्रष्टाचार' एक सामाजिक समस्या
१६	आजादी बनाम महर्षि दयानन्द
१८	तुलसी के काव्य में युग संदर्भ
२३	सत्यार्थप्रकाश पहेली-१६
२४	अच्छे दिन आयेंगे
२५	कथा सरित
२८	स्वास्थ्य- वृक्क (Kidney)
३०	सत्यार्थ-पीयूष- संन्यासाश्रम

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

धरती पर स्वर्ग

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२ गतांक से आगे .....

वेदमन्त्र पति और पत्नी को आदेश दे रहा है- **'इहैव स्तम'** तुम दोनों इसी घर में रहो, **'मा वि यौष्टम्'** तुम परस्पर द्वेष मत करो, **'विश्वमायुर्व्यश्नुतम्'** तुम दोनों सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो, **'क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिः'** पौत्रों और नातियों के साथ खेलते हुए **'स्वे गृहे मोदमानौ'** अपने घर में आनन्दपूर्वक रहो।

इस मन्त्र में पाँच बातें कही गई हैं। पहली चार बातें तो साधन के रूप में और पाँचवीं बात साध्य के रूप में। संसार में सदा साधनों को आचरण में लाने से ही साध्य की प्राप्ति होती है। वेदमंत्र का लक्ष्य यह है कि तुम दोनों (गृहस्थ) आनन्दपूर्वक व प्रसन्नतापूर्वक घर में रहो। प्रसन्नता और आनन्द कैसे उपलब्ध हो? इसके चार साधन बताये गये। वेदमंत्र का क्रम अपने ढंग का है, परन्तु हम सुखपूर्वक गृहस्थ के साधन अपने ढंग से गिनायेंगे और उनकी क्रमशः व्याख्या करेंगे।

सामान्यतः सुखी गृहस्थ का पहला साधन, सुन्दर स्वास्थ्य है। जीवन को सुखी बनाने के लिए शारीरिक नीरोगता का महत्व समझना बहुत आवश्यक है। जिसका स्वास्थ्य सुन्दर है वही दीर्घजीवन प्रापत कर सकता है। मंत्र में एक पद आया है- **'विश्वमायुर्व्यश्नुतम्'** अर्थात् समस्त आयु को तुम दोनों भोगो। वेद ने मनुष्य की सामान्य आयु सौ वर्ष निर्धारित की है। सौ वर्ष की आयु को प्राप्त करना मानो अमृत को प्राप्त करना है। शतपथ ब्राह्मणकार ने कहा है-

एतद् वै मनुष्यस्यामृतत्वं यत् सर्वमायुरेति।
य एषं वर्षाणि यो वा भूयांसि जीवति स हैवेद् अमृतमाप्नोतिः।।

अर्थात् निश्चय ही यह मनुष्य का अमरत्व प्राप्त करना है, जो वह सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करता है। जो सौ वर्ष जीता है अथवा इससे अधिक, वह निश्चय से अमृत को प्राप्त करता है।

सौ वर्ष की आयु प्राप्त करने के लिए शारीरिक अवस्था सुदृढ़ होनी चाहिए। आयु तो शरीर ही प्राप्त करता है, आत्मा तो आयु प्राप्त करती नहीं। शरीर जितना सुदृढ़ होगा, उतना ही मनुष्य दीर्घ आयु को प्राप्त करेगा। संस्कृत के कवि ने कहा है-

शरीर माद्यं खलु धर्मसाधनम्। - कुमारसम्भव ५।३३

निश्चित रूप से शरीर धर्म का साधन है। हमारा बौद्धिक विकास, हमारी आर्थिक उन्नति केवल शारीरिक उन्नति पर ही निर्भर है। वैयक्तिक,पारिवारिक और राष्ट्रीय सभी प्रकार की उन्नति का आधार शरीर ही तो है। इहलौकिक हो अथवा पारलौकिक, सभी प्रकार का विकास शरीर के आधार पर ही संभव है। जप, तप, योगाभ्यास, परोपकार- ये सभी सुन्दर स्वास्थ्य के कारण ही सिद्ध हो सकते हैं। जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य सुन्दर नहीं वह अपने लिए भी भारस्वरूप है और दूसरों के लिए भी। गृहस्थ जीवन का सुख तो शारीरिक स्वस्थता के बिना कदाचित् प्राप्त नहीं किया जा सकता। भला उस व्यक्ति का क्या जीवन है, जो सदा दवाइयों की शीशियाँ लेकर चिकित्सकों के औषधालयों की परिक्रमा करता है? वह ऋतु के किसी भी प्रकोप को सहन नहीं कर सकता। ऐसे व्यक्ति को जीवन में कुछ भी सरसता प्राप्त नहीं होती। अतः शरीर को सबल एवं पुष्ट बनाना हमारा परम धर्म है। प्राचीन यूनानी पाइथागोरियन विचारक भी शरीर को परमात्मा की सम्पत्ति और परमात्मा का मंदिर मानते थे। शरीर की महत्ता को उन्होंने भी स्वीकार किया है। अथर्ववेद में परमात्मा से शारीरिक नीरोगता की कामना की गई है-

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे।
शं मे चतुर्भ्यो अंगेभ्यः शमस्तु तन्वे३ मम।। - अथर्व. १।१२।४

अर्थात् मेरे ऊपर के शरीर के लिए सुख और मेरे नीचे के शरीर के लिए सुख हो। मेरे चारों अंगों के लिए सुख और मेरे सब शरीर के लिए सुख हो।

आश्वलायन गृह्यसूत्र के ऋषि ने जातकर्म संस्कार के समय बालक की शारीरिक सुदृढ़ता की ओर संकेत करते हुए कहा है-

अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव। - आश्व.१।१५।३

अर्थात् हे बालक! तू पत्थर और फरसे के समान सुदृढ़ बन।

कोई योग करना चाहे तो उसके लिए भी स्वस्थ शरीर की महती आवश्यकता है और यदि कोई भोग करना चाहे तो उसके लिए भी स्वस्थ शरीर आवश्यक है, अर्थात् इहलौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नतियों का साधन शरीर है।

प्रश्न यह है कि सुन्दर स्वास्थ्य को प्राप्त करने के क्या साधन जुटाए जाएँ? मेरे विचार में सुन्दर स्वास्थ्य को प्राप्त करने के पाँच साधन हो सकते हैं। वे साधन इस प्रकार हैं- सात्विक आहार, व्यायाम, संयम, नियमित दिनचर्या, प्रसन्नता एवं निश्चिन्तता।

जीवन में स्वस्थ शरीर के लिए हमें आहार की आवश्यकता तो है ही, परन्तु वह आहार सात्विक होना चाहिए। सात्विक आहार जहाँ मनुष्य में नीरोगता लाता है वहाँ मनुष्य के जीवन में पवित्रता का संचार भी करता है। सात्विक आहार में अन्न, दूध, घी, मक्खन, लस्सी, सब्जी और फल आते हैं। सात्विक आहार में शराब आदि मादक द्रव्य और मांस, अण्डे, मछली आदि पदार्थ निषिद्ध हैं। भारतीय आचार-शास्त्र में ये वस्तुएँ वर्जित हैं। महर्षि दयानन्द जी ने 'शांर्गधर' का उद्धरण देते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-

बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्य मदकारी तदुच्यते। - शा.४।२१

जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें। महर्षि उपर्युक्त सभी पदार्थों को बुद्धि के लिए नाशक मानते थे, इन पदार्थों का सेवन मानव जाति के लिए अहितकर समझते थे। वे इन्हें मानव की शारीरिक एवं आत्मिक दोनों प्रकार की उन्नति के लिए अहितकर समझते थे। मनु महाराज का उद्धरण देते हुए उन्होंने पुनः निवेदन किया-

वर्जयेन्मधुमांसं च। - मनु. २।१७७

मनुष्य शराब और मांस से परे रहे, इनका सेवन न करे।

इसके पश्चात् सुन्दर स्वास्थ्य का दूसरा साधन व्यायाम है। इससे आहार पचता है। शरीर के अंगों में चुस्ती और फुर्ती का संचार होता है। मनुष्य अपने अन्दर एक प्रकार की ताजगी अनुभव करता है। व्यायाम से अंग सुडौल बनते हैं। शरीर में शक्ति का संचार होता है। भूख खूब भली-भाँति अनुभव होती है। धमनियों में रक्त-प्रवाह ठीक ढंग से होता है। व्यक्ति प्रसन्नचित्त रहता है। शरीर की कार्यशक्ति बढ़ती है और काम करने की प्रवृत्ति बनी रहती है। व्यायाम हल्का ही होना चाहिए। भारी व्यायाम व्यक्ति को आलसी, प्रमादी और निद्रालु बना देता है। हल्के व्यायाम के लिए योगासनों का प्रयोग अधिक लाभकारी है। **क्रमशः ....**

- प्रो. रामविचार एम. ए. (साभार- वेद संदेश)

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

अत्यन्त अद्‌भुत ज्ञान का खजाना मैनें मेरे जीवन में प्रथम बार देखा। वह भी सचित्र। धन्य हैं इस संस्था में काम करने वाले समस्त सेवा भावियों के माता-पिता को। जिनके संतान ऐसे पवित्र एवं गरिमा से पूर्ण संस्थान में कार्यरत् हैं। ये लोग, आज के इस युग में जहाँ अपनी संस्कृति एवं ऋषियों के ज्ञान को भूल चुके हैं, वहाँ लोगों को वास्तविकता का ज्ञान करा रहे हैं। मैं स्वामी दयानन्द एवं यहाँ के सभी कार्यकर्त्ताओं को नमन करता हूँ। - सोनाराम सियाग, बाड़मेर

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

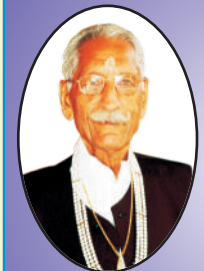

प्रसन्नता और प्रगति,
के मूल आधार।
सत्य संघर्ष ईमानदारी,
और परोपकार॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

जीवन को कैसे जिया जाय यह कितने लोग समझ पाते हैं। हमें लगता ऐसा है कि हम अधिक से अधिक संग्रह करते ही जायं। अर्जन की एक सीमा सोचते भी हैं तो उसके पूरा होते ही एक नयी सीमा बना लेते हैं । कितना भी अर्जन कर लें संतुष्टि नहीं होती क्योंकि जीवन के यथार्थ का साक्षात् नहीं कर पाते। हम स्वयं के लिए ही नहीं अपनी पीढ़ियों के लिए भी अकूत संपत्ति छोड़ जाना चाहते हैं।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र में स्पष्ट निर्देश है-

ईशा वास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥ - यजुर्वेद ४०।१

यहाँ स्पष्ट व्याख्यान है कि धन का त्यागपूर्वक उपभोग किया जाय। गहराई से सोचा जाय तो इस त्याग में भी स्वार्थ है पर उसको जानना और फिर मानना विरलों के बस का है। जन्म-जन्मान्तरों की इस शृंखला में आगे के जन्म में सुख-साधन मिल सकें इसके लिए आवश्यक है इस जन्म में त्याग। इसे छोटे से उदाहरण से समझ सकते हैं। आप किसी बैंक में धन अगर जमा करायेंगे तभी आपको समय आने पर परिपक्वता राशि मिल सकेगी, उसी प्रकार आप अपनी अर्जित क्षमता को मानवता के कल्याण के लिए अर्पित करेंगे तभी वह क्षमता आपको कई गुना होकर मिलेगी अन्यथा नहीं। पर इस तथ्य को जानकर भी इसका अनुकरण करना हरेक के बस की बात नहीं है। जीवन के किसी मोड़ पर जब यह बात समझ आती है तो उसके जीवन की दिशा ही बदल जाती है। अक्सर जीवन समाप्त होने तक यह तथ्य समझ नहीं आता और आँख बंद होते समय हसरत भरी निगाहों से पीछे छूटते धन-संपदा, आत्मीयजनों को देखने और संसार से रोते हुए प्रस्थान करने के अतिरिक्त और कोई

चारा नहीं रहता। कुछ को अंतिम समय होश आता है, पर तब -'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत' की कहावत लागू होती है।

कहा जाता है कि जब विश्वविजेता सम्राट सिकंदर का अंतिम समय आया तो अपनी मातृभूमि के आगोश में दम तोड़ने का अरमान भी घुट कर रह गया। तब लाचार अशक्त पड़ा सिकन्दर अपने विश्वस्त सेनापति को अपनी अंतिम इच्छा बताता है तथा हर कीमत पर उसे पूरी करने का निर्देश देता है। सिकन्दर अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करता है कि उसके जनाजे के मार्ग में उसकी सारी लूटी हुयी धन-दौलत बिखरा दी जाय तथा उसके दोनों हाथ बाहर निकाल दिए जायँ ताकि लोग यह समझ सकें जो सिकन्दर लाशों के ढेर खड़े कर दौलत अर्जित करता रहा वह उसके साथ नहीं जा रही, वह यहीं रह रही है और सिकंदर इस दुनिया में खाली हाथ आया था और खाली हाथ ही जा रहा है। वस्तुतः इस संसार में जन्म लेने वाले हर व्यक्ति की यही नियति है। जो महान् आत्मा इसे जल्दी जान लेते हैं वे बुद्ध और दयानन्द बन जाते हैं ।

भारतीय धरा आध्यात्मिक जीवन दर्शन के लिए उर्वरक रही है यह सत्य है, परन्तु अन्यत्र भी इस फिलासफी को हृदयंगम कर लेने वाले महामना हैं, इनमें से कुछेक की चर्चा यहाँ करना उपयुक्त समझते हैं।

माइक्रोसाफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स को कौन नहीं जानता। गेट्स और उनकी पत्नी मेलिंडा ने गेट फॉउन्डेशन की स्थापना की जिसमें अब तक मानव कल्याण के लिए ३७ अरब डालर जमा किये हैं। गेट्स ने दान घोषणा पत्र की स्थापना कर अन्य धनपतियों को

भी अपनी आधी सम्पति दान करने के लिए प्रेरित किया है।

प्रसिद्ध अरबपति वारेन बफे ने अपनी ९९ प्रतिशत संपत्ति जीवन काल में अथवा मरने के बाद दान करने की घोषणा की है।

'ई- बे' के संस्थापक ओमीदयार ने ३१ वर्ष की आयु में ही अरबपतियों की सूची में अपना नाम दर्ज करा लिया था। उन्होंने भी गेट्स तथा बफे का अनुसरण किया है । जीवन के फलसफे को समझने वालों की कतार में अनेक अरबपति मौजूद हैं। यहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि इन अमीर महानुभावों के संतान नहीं है और इस कारण वे चेरिटी कर रहे हैं । इन सभी के संतान हैं पर वे अनुभव करते हैं कि उन्होंने संतानों के लिए पर्याप्त कर दिया अब उन्हें अपना रास्ता स्वयं तय करना है । प्रसिद्ध एक्टर जैकी चैन मानों कवि के शब्दों में कहते हैं कि - 'पूत सपूत तो क्यों धन संचय , पूत कपूत तो क्यों धन संचय'।

इन सर्वमेधकर्ताओं की सोच है कि आवश्यकता से अधिक धन संतान के लिए छोड़ना उन्हें निकम्मा बना देगा। न्यू जर्सी के मार्कस जिनकी संपत्ति डेढ़ अरब डालर है, वे सारी संपत्ति विकलांगों तथा शिक्षा के लिए छोड़ना चाहते हैं।

आपने दुनिया भर के हवाईअड्डों पर ड्यूटी फ्री दुकानें देखी होंगी। इनके सहस्वामी चक फीनी १९८० में ही अरबपति के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपने 'अटलांटिस फिलेंथ्रोपीस' को स्थानांतरित कर दी। आज कहा जाता है कि उनके पास अपना घर तथा कार नहीं । फीनी का कहना है कि 'मैं अपना अंतिम चेक जब हस्ताक्षरित करूँ तब वह बाउंस हो जाय।'

ये कुछ नाम हमने भारत से बाहर की दुनिया के लोगों के दर्शाए हैं। भारत में भी इस श्रेणी के कुछ लोग हैं। आज जब इंसान एक एक पैसे को भींच कर रखने का भरसक प्रयत्न करता है (मृत्यु-पाश से पूर्व तक) वहाँ इस प्रकार के महानुभाव आदर्श व विरले ही कहे जावेंगे। यहाँ हम एक साधारण आय वाले असाधारण व्यक्ति पालम कल्याणसुंदरम की चर्चा अवश्य करना चाहेंगे। पालम कल्याणसुंदरम उन चंद लोगों में से हैं जो बिना किसी चीज की परवाह किये पिछले कई वर्षों से अपनी सारी कमाई दान करते आ रहे हैं। तमिलनाडु के मेलाकरिवेलामकुलम में पैदा होने वाले कल्याणसुंदरम अपने भोजन और रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए पार्ट टाइम नौकरी करते हैं। पुस्तकालय कर्मी कल्याणसुन्दरम अपने पेशे से प्राप्त होने वाली महीने की सारी कमाई, बचतें, वंचितों को दान कर देते हैं। गरीबों, वंचितों के अनुभवों से रूबरू होने के लिए वो सड़कों, प्लेटफार्मों पर सोकर रात गुजारते हैं। जरूरतमंदों की मदद के लिए उन्होंने शादी नहीं की। सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन के रूप में मिले १० लाख रुपये उन्होंने अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिये दान कर दिए। पुस्तकालय विज्ञान में गोल्ड मेडलिस्ट और इतिहास व साहित्य में परास्नातक कल्याणसुन्दरम ने कई पुरस्कार जीते हैं। इन विभिन्न पुरस्कारों से अर्जित ३० करोड़ रुपये उन्होंने बेहिचक जरूरतमंदों को दे दिये।

सही मायने में वेद की ऋचा **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'** को इन्होंने अपने जीवन में जिया है।

एक दिलचस्प प्रश्न हमारे समक्ष आया कि प्रायः मरने वाले की अंतिम इच्छा क्यों पूँछी जाती है। इस बात के अनेक उत्तर हो सकते हैं पर अपनी बात को आगे बढाते हुए हम कहना चाहेंगे कि अपने अंतिम समय को सामने देख अनेक बार दुरात्माओं को भी होश आ जाता है और वे पश्चाताप की आग में जलने लगते हैं। परन्तु कालचक्र को उलटा तो लौटाया नहीं जा सकता। हाँ अंतिम इच्छा के रूप में जाने वाले को किंचित सांत्वना दी जा सकती है। सिकन्दर की अंतिम इच्छा इस तथ्य को प्रकाशित करती है। एक अन्य उदाहरण- टेनेसी निवासी फिलिप वर्कमेंन एक अपराधी था जिसे एक दुकान लूटते समय एक पुलिस अधिकारी की गोली मारकर हत्या करने के अपराध में मृत्यु दण्ड सुनाया गया। उसने अंतिम इच्छा व्यक्त की कि आस-पास के निराश्रितों को शाकाहारी पिज्जा खिलाया जाय। अधिकारिओं ने पैसे बचाने की गरज से इस पर ध्यान नहीं दिया। पर यह बात अखबार के माध्यम से फैल गयी और लोगों ने सहस्रों डालर चन्दा करके उसकी अंतिम इच्छा को पूरा किया।

इस प्रकार व्यक्ति की अंतिम इच्छा को पूरा करना नैतिक और भलाई का काम माना गया है। बहुत से लोग अपने जीवनकाल में तो दान देने में अपना धन लगाते ही हैं पर पूरा नहीं। कारण संभवतः यह सोच रहती है कि जब तक जीवन है तब तक न

जाने कब कैसी आवश्यकता पड़ जाय अतः धन का होना भी आवश्यक है। ऐसे सज्जन दानदाता वसीयत कर जाते हैं कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी इच्छानुसार उनकी संपत्ति वितरित कर दी जाय। इसका जिम्मा वे अपने सबसे भरोसे के लोगों पर छोड़ जाते हैं, जिन्हें वसीयत का निष्पादक कहते हैं। व्यक्ति के चले जाने के पश्चात् इन निष्पादकों का परम पवित्र कर्तव्य है कि वे मृतक की इच्छा को यथावत् पूरा करें। यह उनका नैतिक कर्त्तव्य ही नहीं, मृतक ने जो उन पर विश्वास किया उस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने का आवश्यक कर्त्तव्य कर्म भी है। वसीयतकर्त्ता के जीवनकाल में वह, प्रमादी अथवा विरुद्ध हो जाने वाले निष्पादक को पृथक् कर सकता है। उदाहरण के तौर पर महर्षि दयानन्द ने मेरठ में अपनी वसीयत (प्रथम) तैयार करवाई थी। कुछ काल पश्चात् महर्षि को ज्ञात हुआ कि उनके द्वारा वसीयत द्वारा निर्मित सभा के कुछ सदस्य धूर्त निकले। २७ फरवरी १८८३ को उदयपुर में नयी वसीयत कराकर उन सदस्यों के स्थान पर नए नाम रख दिए। ३० अक्टूबर १८८३ को महर्षि का निधन हो गया , अब वे पुनः कोई परिवर्तन करने के लिए उपलब्ध नहीं थे, चाहे उनके द्वारा स्थापित सभा के सभासद कैसे भी हों। अतः वसीयतकर्त्ता की मृत्यु के उपरान्त तो यह और विशेष दायित्व निष्पादकों का हो जाता है कि वे अक्षरशः मृतक की अंतिम इच्छा की पालना करें, क्योकि न करने की स्थिति में यह दायित्व अन्य को सौंपने अब वह स्वयं नहीं आ सकता।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि प्रतिज्ञा सोच समझकर करे फिर उसे पूरा करे, क्योंकि प्रतिज्ञा-हानि सबसे बड़ी हानि है। व्यक्ति अगर जीवित है तो वह सामने से प्रतिज्ञा पूरी न होने पर अन्य वैकल्पिक मार्ग सोच सकता है पर दिवंगत होने की अवस्था में वह निष्पादकों के प्रतिज्ञा भंग करने पर उनका क्या कर सकता है और न ही अन्य किसी के माध्यम से अपनी अंतिम इच्छा की पूर्ति करवा सकता है। ऐसे में निष्पादक यदि मृतक की इच्छा का अक्षरशः पालन नहीं करते हैं तो यह विश्वास भंग रूपी पाप ही होगा।

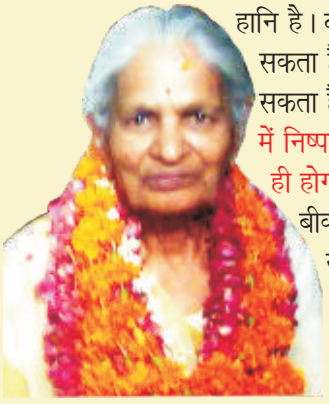

बीकानेर की शान्ति भंडारी बहिन जी ने अपनी मृत्यु के पश्चात् उनकी संपत्ति को सामाजिक संस्थाओं में कैसे वितरित किया जाय यह वसीयत कर उसका निष्पादक अपने भरोसे के सज्जन को बना दिया। उन्होंने इस प्रकार अपने कर्त्तव्य को निभाया कि सभी संस्थाओं को अनुमान से ज्यादा धन प्राप्त हुआ और यह धन उन्होंने स्वयं संस्थाओं को प्रेषित कर दिया। संस्थाओं को कुछ भी तो नहीं करना पड़ा। इसे कहते हैं वसीयत के पुण्यशील निष्पादक। पर समाज में इससे उलट भी निष्पादक होते हैं।

एक बार ड्राइव कर रहा था। एफ.एम. पर एक कार्यक्रम में एक्टर अनु कपूर अभिनेत्री मीना कुमारी के जीवन की कुछ घटना सुना रहे थे जिसमें वसीयत की चर्चा भी थी कि किस प्रकार मीना कुमारी जी ने अपनी वसीयत में 'फिलेंथ्रोपी' के लिए प्रावधित किया था, परन्तु पीछे रहने वाले निष्पादकों व रिश्तेदारों ने उनकी इच्छा की किस तरह धज्जियाँ उडायीं, सुनकर दिल भर आया। जो व्यक्ति आप पर विश्वास कर अपने पश्चात् आप पर सब कुछ छोड़कर गया उस दिवंगत के साथ ऐसा विश्वासघात नैतिक दृष्टि से तो अक्षम्य ही है। मीना जी की वसीयत की दशा सुनकर ही यह आलेख लिखने का मानस बनाया। पैसा दिवंगत का, आपको अपनी जेब से कुछ नहीं लगाना फिर भी यह प्रमाद क्यों? नहीं भूलना चाहिए कि कई उपलब्ध विकल्पों में से मृतक ने आपका चयन किया था, आपकी आत्मीयता तथा ईमानदारी पर विश्वास करके। उस विश्वास को तोड़ना अनुचित तथा अनैतिक है।

– अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001
अब मात्र आधी कीमत में
₹ 80
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आत्म-शुद्धि से प्रभु प्राप्ति

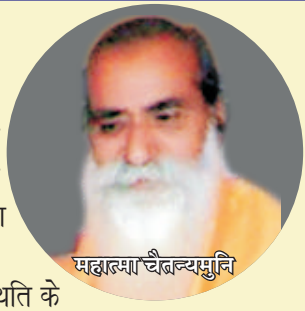

युष्माऽइन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ। अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि। दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि॥ - यजुर्वेद १/१३

यह मानव जीवन हमें अपने पुण्य कर्मों के कारण मिला है और कर्म-स्वतंत्रता देकर प्रभु ने हमें आगे और अधिक पुण्य कर्म करने का सुअवसर प्रदान किया है। इसलिए मंत्र में कहा गया है कि **'युष्मा इन्द्रः अवृणीत वृत्रतूर्ये'** तुम्हें परमात्मा ने काम संहाररूप के निमित्त चुना है क्योंकि जिन लोगों के जीवन अति-नीच थे उन्हें तो परमात्मा ने भोग योनियों में भेज दिया है और तुम्हें प्रभु ने कामादि शुत्रओं के संहार करने के लिए चुना है और इन्द्रियजित् होने के बाद ही **'इन्द्रम् अवृणोध्वम्'** तुम परमात्मा को प्राप्त हो सकोगे अर्थात् इन कामादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके ही हम उस प्रभु का वरण कर सकेंगे। प्रभु से मित्रता करने के लिए उन जैसे गुण, कर्म और स्वभाव को धारण करना होता है। वेद हमें आदेश देता है कि **'अग्निषोमाभ्याम् जुष्टम् प्रोक्षामी'** तुम अग्नि अर्थात् शक्ति और सोम अर्थात् शान्ति का प्रयोग करो, इन दोनों के समन्वय से सन्तुलित जीवन यापन करो। आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र है इसलिए कहा गया कि तुम **'दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै'** दिव्यकर्मों के द्वारा स्वयं को शुद्ध करो और उस महादेव से अपना संगतिकरण करो। कहा भी गया है-

'कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः'।

अर्थात् जनक आदि ने ऐसे ही कर्मों से सिद्धि प्राप्त की थी, तुम भी दिव्य-कर्मों को करके प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करो। **योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगत्यक्त्वात्मशुद्धये-** योगी लोग आत्मशुद्धि के लिए सदा कार्य करते हैं। अतः यदि हम भी तद्वत् करेंगे तो परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त करने के योग्य शुद्धता एवं पवित्रता को प्राप्त हो जायेंगे.....।

प्रभु प्राप्ति के बाद उस साधक की स्थिति के सम्बन्ध में वेद कहता है-

मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरुर्यज्ञोऽतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात् त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा॥ - यजुर्वेद १/२३

वह साधक निर्भय हो जाता है। प्रभु के उपासक को किसी प्रकार का भी भय नहीं रहता है। उसके लिए मित्र-अमित्र, परिचित-अपरिचित, आगे-पीछे और ऊपर-नीचे से निर्भयता प्राप्त हो जाती है। योगीराज श्रीकृष्ण तथा महर्षि दयानन्द जैसी विभूतियों के उदाहरण हमारे सामने हैं। वह साधक **'मा संविक्थाः'** कभी भी कम्पायमान नहीं होता। प्रभुभक्त बन जाता है वह किसी भी परिस्थिति में हतोत्साहित नहीं होता बल्कि सदा ही आत्मविश्वास से भरा रहता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह अडिग और अचल रहता है तथा ऐसे व्यक्ति ही सभी समस्याओं का हल निकालने में भी सफल होते हैं। आगे उस शुद्ध हुए साधक के बारे में कहा कि वह **'अतमेरुः भूयात्'** उत्तम कर्म करने में कभी भी थकता नहीं है। ऐसा साधक निरन्तर अच्छे कार्य करने में लगा रहता है। उसे आलस्य और प्रमाद कभी भी नहीं घेरता है बल्कि सदा ही कर्मशील बना रहता है। उस साधक में **'यज्ञः आतमेरुः'** यज्ञमयी भावना सदा बनी रहती है। उसके सभी कार्य स्वार्थमुक्त होते हैं। उन कर्मों में परहित की भावना ही छिपी रहती है और वह ऐसे कार्य करने से कभी थकता और ऊबता नहीं है बल्कि उसकी शक्ति कभी क्षीण नहीं होती है। वह अपने जीवन का उपयोग अधिक से अधिक सुकर्म करने के लिए करता है। ऐसे साधक से प्रभु कहते हैं कि मैं तुम्हें **'त्वा त्रिताय, त्वा, एकताय त्वा'** ज्ञान, कर्म और भक्ति के लिए प्रेरित करता हूँ। प्रभु सवितादेव हैं, प्रेरक हैं मगर वे उसी को प्रेरित करते हैं जो योग्य हो। साधक ने योग्यता प्राप्त की है इसलिए प्रभु उसे कह रहे हैं कि ऐसे भक्त के ज्ञान और कर्म का सदा ही विस्तार होता रहता है। ऐसा व्यक्ति सत्य- ज्ञान, सत्य-कर्म ओर सत्य-भक्ति से जुड़ जाता है। उसका जीवन क्रियात्मकता के साथ जुड़ जाता है। वह स्वयं तो ज्ञान-वृद्ध होता ही है मगर इसके साथ-साथ वह औरों को भी सच्चे ज्ञान, कर्म और भक्ति के साथ जोड़ता है। वह सत्यज्ञान और सत्यकर्म से जुड़ने के बाद ज्ञानपूर्वक कर्म करने को भी

भक्ति मानता है और ज्ञानानुसार सदा क्रियावान् रहता है अर्थात् उसके कर्म ज्ञानमय ही हो जाते हैं। गीता के अनुसार कहें तो ये ज्ञानपूर्वक कर्म ही वास्तव में निष्काम कर्म होते हैं। क्योंकि उसमें व्यक्ति का अपना कोई भी स्वार्थ नहीं होता है, बल्कि वह सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझता है। यजुर्वेद के इसी अध्याय में आगे चलकर कहा गया है कि-

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददेऽध्वरकृतं देवेभ्यऽइन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः
शततेजा वायुरसि तिग्मतेजा द्विषतो वधः॥ - यजुर्वेद १/२४

मैं तुझे अर्थात् संसार की प्रत्येक वस्तु को **'सवितुः देवस्य'** उस प्रेरक एवं दिव्य गुणों के पुंज प्रभु की **'प्रसवे'** अनुज्ञा में **'आददे'** ग्रहण करता हूँ। प्रभु की आज्ञा यही है कि 'माप-तोलकर' भोग कर। वेद में अन्यत्र कहा है- **'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः'** अर्थात् त्यागमयी भावना से भोग कर। गीता में इसी बात को इस रूप में कहा है **'युक्ताहारविहारस्य ...'** हमारा आहार व विहार युक्ततापूर्ण हो। हम कहीं भी किसी प्रकार भी अतिवादी न बनें। जहाँ भी हम वेदाज्ञा का उल्लंघन करेंगे वहीं पर हम अपुण्य के साथ जुड़ जायेंगे, जो प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करने में व्यवधान है। **'अश्विनो बाहुभ्याम्'** प्राणापानों के प्रयत्न से अर्थात् प्रत्येक वस्तु को अपने पुरुषार्थ से प्राप्त कर। बिना परिश्रम किए किसी भी वस्तु को प्राप्त करने की कामना करना पाप की श्रेणी में आता है। व्यक्ति जो भी प्राप्त करे अपने पुरुषार्थ से ही करे अन्यथा बिना परिश्रम के कुछ प्राप्त करना **'स्तेय'** कोटि में आता है। **'पूष्णोः हस्ताभ्याम्'** मैं किसी भी वस्तु का प्रयोग करता हूँ तो पोषण की ही दृष्टि से करता हूँ अर्थात् व्यक्ति उतने की ही कामना करे जिससे उसका गुजारा हो जाए.... अन्यथा आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह करने से वह 'परिग्रही' हो जायेगा जो यमों का उल्लंघन है.... वह साधक ही कैसा जो यमों की भी अनुपालना न करता हो.... **'देवेभ्यः अध्वरकृतम्'** मैं देवताओं के लिए यज्ञ में अर्पित की गई वस्तु के यज्ञशेष को ही ग्रहण करता हूँ। व्यक्ति की दिव्यता की एक कसौटी यह भी है कि वह यज्ञशेष का ही ग्रहण करे क्योंकि इस सम्बन्ध में कहा गया है-

तैर्दत्तानप्रदायेभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः।

अर्थात् जो देवताओं से दी गई वस्तुओं को बिना देवों को दिए खाता है, वह चोर ही है। हमें जीवन में जो कुछ भी प्राप्त होता है वह सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, जल एवं वायु आदि देवों की कृपा से ही प्राप्त होता है अतः यज्ञ के द्वारा इन्हें अर्पित करने के बाद ही स्वयं ग्रहण करना चाहिए..... उपरोक्त मंत्रों तथा इस मंत्र में बताए गए ये चार गुण जिस व्यक्ति में आ जाते हैं वह **'इन्द्रस्य** उस प्रभु का **'दक्षिणः बाहुः असि'** दायां हाथ बन जाता है। **'सहस्रभृष्टि'** वह व्यक्ति फिर कार्यों में उपस्थित होने वाले हजारों विघ्नों को भी अपने तेज से नष्ट करने वाला बन जाता है। **'शततेजाः'** उसका जीवन सैंकड़ों-सैंकड़ों वर्षों तक तेजस्वी बना रहता है। वह **'वायुः असि'** सदा वायु के समान क्रियाशील रहता है। वह अपनी **'तिग्मतेजाः'** तेजस्विता के कारण समस्त अज्ञानान्धकार को तिरोहित करके निरन्तर अपने मार्ग पर बढ़ता चला जाता है। वह **'द्विषतो बधः'** पूर्णतः द्वेषरहित हो जाता है।

महर्षि दयानन्द धाम, महादेव
सुन्दरनगर-१७४४०१, हिमाचलप्रदेश

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर

ऋषि दयानन्द के साहित्य का भाषागत अध्ययन

गतांक से आगे .....

डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

अन्य भाषाओं का प्रभाव- ऋषि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे और गुरु विरजानन्द के पास ब्रजप्रदेश में कई वर्ष रहने के कारण वे ब्रजभाषा का भी अच्छा व्यावहारिक ज्ञान रखते थे। इसके अतिरिक्त धर्म प्रचार के लिए विभिन्न प्रान्तों में वे भ्रमण करते थे, फलतः वहाँ की प्रान्तीय भाषाओं का भी प्रभाव होता था। अतएव उनकी हिन्दी में अन्य भाषाओं का प्रभाव भी लक्षित होता है-

गुजराती भाषा का प्रभाव- ऋषि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी, अतः उनकी हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव स्वाभाविक है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में कई गुजराती शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे कुम्भार, ससा, ऊंदर, आजकाल, मुझ, बछड़ी, पोकल (फोकल-सारहीन) गुपचुप, लालजी (बेटेजी), बान्त (वमन) आदि शब्द। गुजराती में अर्द्धचन्द्र अनुस्वार प्रयुक्त नहीं होते, ऋषि दयानन्द ने भी इनका प्रयोग नहीं किया है। इसके अतिरिक्त गुजराती ढंग की वाक्य रचना के उदाहरण भी मिलते हैं। जैसे 'आओ अपने सब मिलके प्रेम, विश्वास और भक्ति करैं।' डॉ. दरबार ने निम्नलिखित वाक्य पर गुजराती का प्रभाव माना है। 'जो वेदादिशास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वरसहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके? इसके अतिरिक्त ऋषि दयानन्द की भाषा में अशक्य, शिक्षा (दण्ड देने के अर्थ में) जैसे मराठी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है।

ब्रजभाषा का प्रभाव- मथुरा में काफी समय निवास करने के कारण ऋषि दयानन्द की भाषा में ब्रजभाषा का पुट भी कई स्थानों पर स्पष्टतः परिलक्षित होता है। उन्होंने 'होवै, रहै, चाहै आदि शब्दों का प्रयोग किया है। 'रखता हूँ' क्रिया के लिए 'धरता हूँ' का प्रयोग अधिकतर किया है।

इसके अतिरिक्त ब्रजभाषा के 'हारा' प्रत्यय का प्रयोग उन्होंने खूब किया है। यथा- देनेहारा, जीतनेहारा, करनेहारा, ताड़नेहारा, छुड़ानेहारा, देखनेहारा, बदलनेहारा, बनानेहारा, सिरजनहारा इत्यादि।

राजस्थानी-पंजाबी मिश्रित प्रभाव- ऋषि दयानन्द ने गुजरात, राजस्थान तथा पंजाब में घूम घूमकर धर्म प्रचार का कार्य किया था, अतः वहाँ की भाषाओं से किसी हद तक प्रभावित होकर हिन्दी में उन प्रान्तों के शब्द भंडार को भी प्रतिष्ठित किया। उदाहरणार्थ निम्नलिखित संज्ञा- शब्द परिष्कृत खड़ी बोली सम्मत रूपों से भिन्न राजस्थानी-पंजाबी मिश्रित हैं- धूड़ (धूल), मट्टी (मिट्टी), बिजुली (बिजली), बद्दल (बादल), सहत (शहद)।

इसके अतिरिक्त जिमाना, बिठालकर, पधरावनी, धीठ(ढ़ीठ) ठिकाने, बाँचना इत्यादि शब्दों में मारवाड़ी भाषा की शब्दावली दृष्टव्य है।

संस्कृत का प्रभाव- ऋषि दयानन्द संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। जीवन के ४९वें वर्ष तक हिन्दी सीखने से पूर्व वे निरन्तर सरल संस्कृत में बोलते थे। उनका लेखन-भाषण संस्कृत भाषा में ही हुआ करता था, अतः उनकी हिन्दी पर संस्कृत भाषा का गहरा असर होना स्वाभाविक है। उनकी भाषा में पुनरपि, पुरश्चरण, पुनरुक्त, ऐक्यमत, पाषण्ड, निरुद्यम, अनध्याय, ऐकमत्य, पुनश्च, अर्थात् नैरोग्य- जैसे शब्दों का प्रयोग सर्वत्र मिल जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने किंचित, किंचिन्मात्र, क्षुधा, पिपासा, तुल्य, नाईं (तरह), मिथ्या, आदि तत्सम शब्दों का व्यवहार किया है। उनकी भाषा में संस्कृत के दार्शनिक शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। जैसे- संयोगज, प्राग्भावात्, परिच्छिन्न, अत्युद्युक्त आदि। आधुनिक विदेशी शब्द तोप, बन्दूक, वकील आदि के लिए उन्होंने शतघ्नी, भुशुंडी, प्राड्विवाक जैसे प्राचीन संस्कृत शब्द प्रस्तुत किए हैं। हिन्दी में अप्रचलित शब्द जैसे सर्वतंत्र, विडालाक्ष, अव्याहतगति आदि का प्रयोग भी मिलता है जो उनके संस्कृतज्ञ होने तथा प्रतिपाद्य विषय की गूढ़ता और गंभीरता का आभास देता है। रंगों और रसों के लिए उन्होंने संस्कृत के शब्द भी प्रयुक्त किए हैं। यथा-रक्त, हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण तथा मिष्ट, क्षार, कटुक, कषाय, तिक्त,

अम्ल आदि।

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में 'वा' का प्रयोग सर्वत्र हुआ है, यह संस्कृत रूप हैं। खड़ी बोली में इसके 'या' 'अथवा' स्वीकृत रूप हैं। खड़ी बोली में वाक्य का प्रारम्भ 'और' या 'क्योंकि' से नहीं होता, किन्तु ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में, विशेषकर सत्यार्थप्रकाश में अनेक ऐसे स्थल मिलते हैं, जैसे- 'और मृतकपर्यन्त का भी दान यजमानों से लेने लगे। 'क्योंकि जो विद्वान् होता है वह सत्यासत्य की परीक्षा करके सत्य का ग्रहण और असत्य को छोड़ देता है।' यह संस्कृत का प्रभाव है। इस प्रकार संस्कृत में 'आदि' शब्द का प्रयोग कई प्रकार से होता है किन्तु हिन्दी में कई संज्ञाओं के बाद 'और' शब्द का प्रयोग किए बिना 'आदि' या 'इत्यादि' का प्रयोग होता है। ऋषि दयानन्द ने संस्कृत के अनुसार 'आदि' शब्द का प्रयोग किया है जैसे- केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि', 'जीव और पृथ्वी आदि', 'इच्छादि रूपादि गुण'। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द की भाषा में संस्कृत का प्रभाव लिंग प्रयोग में भी दिखाई देता है। उन्होंने कुछ ऐसे शब्दों का सर्वत्र पुल्लिंगरूप में प्रयुक्त किया है जिनका हिन्दी भाषा में स्त्रीलिंगरूप स्वीकृत है, यथा- सन्तान, सामर्थ्य, अग्नि, आत्मा, पुस्तक, आयु, प्रलय, विजय इत्यादि। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में कुछ क्रियाएँ भी संस्कृत के अनुकरण पर प्रयुक्त हुई हैं, जैसे- वर्ते, वर्तना, दण्डे, धारने, 'आनन्द भुगाकर', 'लिखे प्रमाणे' जानने, जनाया इत्यादि।

क्रमशः .....

- श्रुति-सौरभ
इंजीनियर्स कॉलोनी, धनवन्तरी नगर
उमरी, अकोला- ४४४००५

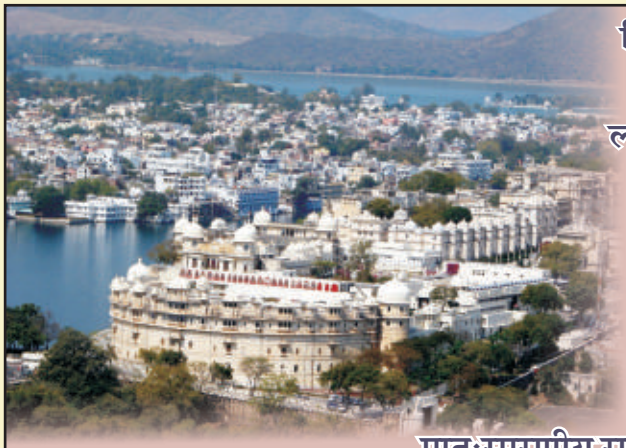

विश्वविख्यात् झीलों की नगरी उदयपुर, जहाँ देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों का ताँता लगा रहता है। इसी रमणीय नगरी में अवस्थित आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत नवलखा महल, जहाँ विराजकर युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने

अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश

का प्रणयन सम्पूर्ण किया था। प्रातःस्मरणीय राणा प्रताप के शौर्य की गाथा से महिमामण्डित, भक्ति, शौर्य तथा आध्यात्म के भावों से आप्लावित इस नगरी में आयोज्य

१८वें भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

(३१अक्टूबर से २ नवम्बर २०१५)

के पावन अवसर पर विश्वभर के भाई-बहिन आमंत्रित हैं। आप, अनेकानेक संन्यासीवृन्द, वेद-प्रवक्ताओं व आर्य नेतृत्व की उपस्थिति से शोभायमान इस महोत्सव में पधारने हेतु अभी से अपना मानस बना, रिजर्वेशन आदि करा लें। हमें सूचित करें।

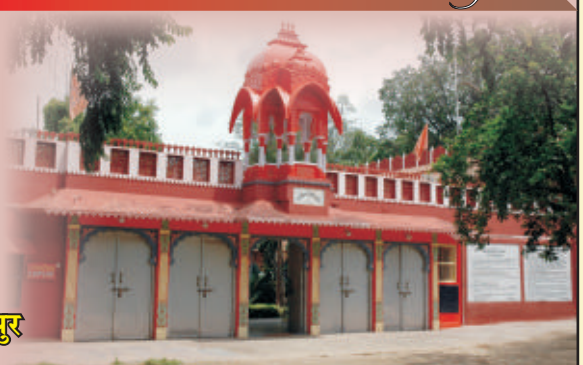

निवेदक- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर
सम्पर्क सूत्र- 0294-2417694, 09829063110

१५ अगस्त २०१५
के सुअवसर पर विशेष

उस मुल्क की सरहद को कोई छू नहीं सकता

जिस मुल्क की सरहद की निगेहवान हैं आँखें

भारत चीन युद्ध के दौरान 'नेफा' क्षेत्र में सेनजाँग पोस्ट पर १० अक्टूबर १९६२ के दिन अचानक ५०० चीनी सैनिकों ने धावा बोल दिया। उस क्षेत्र से आगे न बढ़ने देने की जिम्मेदारी ७ इन्फेन्ट्री बटालियन पंजाब की थी। इस बटालियन के मुट्ठी भर सैनिकों पर शत्रुओं को रोकने की गुरुतर जिम्मेदारी आन पड़ी। शत्रुओं ने प्रबल गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। इस सब की परवाह न कर सिपाही कांशीराम अपनी लाईट मशीनगन साथ ले शत्रुओं को खदेड़ने का संकल्प लेकर मोर्चे पर जम गया। कांशीराम ने बीसियों शत्रुओं को मार गिराया। इस प्रयास में वह स्वयं भी गम्भीर रूप से घायल हो गया। साथियों ने उसे मोर्चे पर से हट जाने को कहा परन्तु उसने इन्कार कर दिया। एक बार शिथिल पड़ जाने पर शत्रुओं ने पुनः बड़ी संख्या में तथा भारी तोपखाने के साथ आक्रमण किया। घायल होने के बावजूद कांशीराम अपनी बन्दूक के साथ मोर्चे पर जम गया। शत्रु नजदीक आता जा रहा था। एक चीनी अधिकारी चार अन्य अफसरों के साथ बिल्कुल नजदीक आ गया और उसने दहाड़कर कांशीराम तथा ट्रेंच में उपस्थित उसके अन्य साथियों से आत्मसमर्पण करने को कहा। जवाब में कांशीराम ने भी सिंह गर्जना की तथा कहा कि आत्मसमर्पण हमें नहीं तुम्हें करना है। कांशीराम की गोलियाँ भी समाप्त हो रहीं थीं। पर उसने ग्रेनेड फैंककर पाँचों को मार गिराया। इसी बीच मौका मिलते ही अन्य चीनी सैनिक भी कांशीराम के नजदीक आ चुके थे। उनमें से एक ने कांशीराम से मशीनगन छीनने का प्रयास किया, परन्तु कांशीराम ने उन्हें ऐसे चतुराई पूर्वक धकेला कि अपनी मशीनगन का देना तो दूर चीनी सैनिकों की भरी हुयी स्वचालित राईफल लेकर अपने प्लाटून में आ गया। इस समय तक और भी गोलियाँ कांशीराम के शरीर में धँस चुकी थीं। परन्तु भारत माँ के इस लाडले सपूत को इसकी तनिक भी परवाह न थी। चीनियों से कांशीराम द्वारा छीनी गई यह स्वचालित राइफल पहला ऐसा हथियार बन गई जिसे दुश्मन के कब्जे से छीना गया था। सिपाही कांशीराम को 'महावीर चक्र' से सम्मानित किया गया। हिमाचल प्रदेश के गाँव दुहा (मण्डी) में श्री नरोत्तम राम के यहाँ १ जुलाई १९३८ को जन्मे कांशीराम ने १९७१ के पाकिस्तान युद्ध में भी भाग लिया था।

आज स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर विचार करें कि क्या इसी भ्रष्टाचार व अनैतिकता में आकण्ठ डूबे भारत के निर्माण का स्वप्न लेकर ऐसे जाबांजों ने अपना रक्त सरहद पर बहाया था? आएँ ऐसे बहादुरों की स्मृति में सुराज्य-निर्माण का संकल्प लें।

आज हम अपनी स्वतंत्रता का आनन्द ले रहे हैं। पर कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह आजादी हमें यूं ही नहीं मिल गई। अनगिनत लोगों द्वारा झेली गयी असीमित यातनाओं और अनगिनत प्राण स्वतंत्रता की वेदी पर अर्पण करने के बाद हमें आजादी प्राप्त हुयी। आज भी हम जब अपने परिवार के साथ घर में सुख से बैठकर टेलीविजन देख रहे होते हैं तो भी सहस्रों मातृभूमि के लाडले अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में सब कुछ भूलकर सीमाओं की रक्षा में डटे रहते हैं, तभी हम यह आनन्द भोग पा रहे हैं। हम इन देश रक्षकों को जानते भी नहीं पर इनका ऋण हम पर सदैव उधार रहेगा। ऐसे ही जवानों में से एक सिपाही कांशीराम थे। उनकी बहादुरी को नमन करते हुए यह प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत है। -सम्पादक

'भ्रष्टाचार' एक सामाजिक समस्या

कृष्ण कुमार यादव

'सत्यमेव जयते'- प्राचीन भारतीय साहित्य में मुण्डकोपनिषद् से लिया गया यह सूत्र वाक्य आज भी मानव जगत् की सीमा निर्धारित करता है। सत्य की विजय हो का विपरीत होगा- असत्य की पराजय हो। सत्य-असत्य, सभ्यता के आरम्भ से ही धर्म एवं दर्शन के केन्द्र-बिन्दु बने हुए हैं। रामायण में भगवान राम की रावण पर विजय को रावण का पुतला जलाकर सत्य की विजय का शंखनाद करते हैं। महाभारत में भी एक कृष्ण के नेतृत्व और पाँच पाण्डवों की सौ कौरवों और अट्ठारह अक्षौहिणी सेना पर विजय को सत्य की असत्य पर विजय बताया गया। कालान्तर में वेद और पुराण के विरोधी बुद्ध व जैन ने भी सत्य को पंचशील का प्रमुख अंग माना।

सत्य एक बेहद सात्विक व जटिल शब्द है। अढ़ाई अक्षरों से निर्मित यह शब्द उतना ही सरल है जितना कि प्यार शब्द, पर इस मार्ग पर चलना उतना ही कठिन है जितना कि सच्चे प्यार के मार्ग पर चलना। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जिन्हें सत्य का सबसे बड़ा व्यवहारवादी उपासक माना जाता है, ने सत्य को ईश्वर का पर्यायवाची कहा। उनके शब्दों में- सत्य ही ईश्वर है एवं ईश्वर ही सत्य है। यह वाक्य ज्ञान, कर्म एवं भक्ति योग की त्रिवेणी है। सत्य की अनुभूति अगर ज्ञान योग है तो इसे वास्तविक जीवन में उतारना कर्मयोग एवं अन्ततः सत्यरूपी सागर में डूबकर इसका रसास्वादन लेना ही भक्तियोग है। शायद यही कारण है कि लगभग सभी धर्म सत्य को केन्द्रबिन्दु बनाकर ही अपने नैतिक और सामजिक नियमों को पेश करते हैं।

सत्य का विपरीत असत्य है। सत्य अगर धर्म है तो असत्य अधर्म का प्रतीक है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं 'जब जब इस धरा पर अधर्म का अभ्युदय होता है तब-तब इस धरा पर जन्म लेता हूँ। भारत सरकार के राजकीय चिह्न अशोक चक्र के नीचे लिखा 'सत्यमेव जयते' शासन एवं प्रशासन की शुचिता का प्रतीक है। यह हर भारतीय को अहसास दिलाता है कि सत्य हमारे लिए एक तथ्य नहीं वरन् हमारी संस्कृति का सार है। साहित्य, फिल्म एवं लोक विधाओं में भी अन्ततः सत्य की विजय का उद्घोष होता है।

सत्य के विलोम असत्य का सबसे व्यापक रूप आज भ्रष्टाचार है। ऐसा नहीं है कि समाज में पहले भ्रष्टाचार नहीं था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में २७ प्रकार के भ्रष्टाचारों का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि जिस प्रकार जिह्वा पर रखे गये शहद का स्वाद न लेना मनुष्य के लिए असंभव है, उसी प्रकार सरकारी कर्मचारी हेतु राजकोष के एक अंश का भक्षण न करना असंभव है। भ्रष्टाचार एक ऐसी विष बेल है जो समाज में नित्य फैल रही है। इसे खत्म करने हेतु कड़े से कड़े दण्ड अपनाये गये पर इसका विष और भी गहरा होता गया। यही कारण है कि एक दौर में भ्रष्टाचार को विश्वव्यापी समस्या कहकर इसका सामान्यीकरण करने की कोशिश की गई तो देखते ही देखते भ्रष्टाचार को शिष्टाचार का पर्याय माना जाने लगा। निश्चिततः जब आप किसी व्यक्ति से काम निकलवाने हेतु उसे रिश्वत न देकर उसके जन्म दिन पर एक महंगा और खूबसूरत उपहार प्रदान करते हैं तो आप अपनी बुरी नीयत को छुपाने का एक शिष्ट तरीका अपना रहे होते हैं।

वस्तुतः भ्रष्टाचार स्वयं व्यवस्था के अंदर से ही जन्म लेता है। नियमों की जटिलता, न्याय में देरी, जागरूकता का अभाव, शार्टकट तरीकों से लक्ष्य पाने की होड़ और मानव

का स्वार्थी स्वभाव ही इसका मूल कारण है। इन सबसे निपटने हेतु स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र प्रेस, लोकायुक्त व लोकपाल संस्था, सतर्कता आयोग, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जैसी संस्थाएँ गठित की गईं। वर्तमान में उदारीकरण व्यवस्था के द्वारा लाइसेंस परमिट राज की समाप्ति, सूचना तकनीक के बढ़ते दायरे के साथ हर किसी पर मीडिया की नजर, सिटीजन चार्टर के माध्यम से विभिन्न विभागों द्वारा नागरिकों को जागरूक बनाना, ई गर्वनेस के द्वारा प्रशासन में कागजी बोझ कम करके कम्प्यूटराइजेशन द्वारा पारदर्शिता लाना व तत्काल सेवा मुहैया कराना, सिविल सोसायटी द्वारा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना, सूचना का अधिकार लागू करने व स्टिंग ऑपरेशन जैसे तत्वों के द्वारा भी भ्रष्टाचार पर काबू करने के प्रयास किए गए हैं।

ही भ्रष्टाचार के साथ भी है।

भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या भी है। इससे निजात पाने हेतु जरूरी है कि लोग वैयक्तिक व मानसिक रूप से भ्रष्टाचार से मुक्त हों। गाँधी जी ने सत्याग्रह का प्रतिपादन करते हुए कहा था कि इसे पूर्ण रूप से अपनाने हेतु जरूरी है कि सर्वप्रथम मानव अपने दुराग्रहों से मुक्ति पाये तत्पश्चात् दूसरों हेतु एक आदर्श उपस्थित कर उन्हें सत्य की राह दिखाये। इस सम्बन्ध में गाँधी जी का एक सूत्र वाक्य दृष्टव्य है-

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
शायद पूर्ण निष्पाप, तुम भी नहीं।

दर्शन की भाषा में कहें तो हर व्यक्ति ईश्वर का चित् होने के कारण सत् है। उसके दुराग्रह ही उसे बन्धनों में बाँधते हैं। इन बन्धनों से मुक्ति के विभिन्न रास्ते बताये गये हैं जिनको

भ्रष्टाचार उस दीमक की तरह है जो समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला करता है। यही कारण है कि इसे समाप्त करने हेतु हमें उस मर्म पर चोट करनी होगी, जहाँ से भ्रष्टाचार रूपी गेंद उछलती है, न कि उस जगह जहाँ वह गिरती है। भ्रष्टाचार पर अनेकों सेमिनार हुए, बड़े-बड़े पन्ने इसे खत्म करने के दावे से रंगे गए और तमाम जबानी जमा खर्च हुए पर हम इस तथ्य की अवहेलना कर रहे हैं कि भ्रष्टाचार अन्ततः एक नैतिक एवं वैयक्तिक समस्या है। जब तक हर व्यक्ति स्वयं को इस दोष से मुक्ति दिलाने का प्रयास नहीं करता तब तक भ्रष्टाचार उन्मूलन एक नारा मात्र ही रहेगा। भगवान राम अन्त तक रावण के दस सिरों को तीरों से बींधते रहे पर उस पर कोई फर्क नहीं पड़ा, अन्ततः विभीषण के इशारे पर उन्होंने रावण की नाभि पर तीर चलाया और उसे धराशायी करने में सफल रहे। ऐसा

अपनाने के पश्चात् व्यक्ति मोक्ष की अवस्था को प्राप्त करता है। मोक्ष -प्राप्ति के पश्चात् व्यक्ति इस संसार के पुनर्जन्म चक्र से मुक्त हो जाता है।

यह सत्य है कि भ्रष्टाचार की जड़ें समाज में काफी गहरी हैं, पर इतनी भी गहरी नहीं कि कोई चाहकर भी उन्हें नहीं हिला सके। यही कारण है कि भ्रष्टाचार पर पड़ी हर चोट उसे झकझोर कर रख देती है। सत्य भले ही कम चोट करता है पर जब करता है तो वह बेहद तीक्ष्ण होती है। जरूरत भ्रष्टाचार को एक लाइलाज रोग मानकर शान्त बैठने की नहीं, वरन् इसे समाप्त करने हेतु प्रयास करने की है-

कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर को तबीयत से उछालो तो यारो।।

निदेशक डाक सेवाएँ
राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर,राजस्थान-३४२००१
मोबाइल ०८००४९२८५९९

आजादी (राष्ट्रीय पर्व) बनाम महर्षि दयानन्द

दृष्टि कोण

''स्वदेशी शासन चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो विदेशी शासन से अच्छा ही रहता है।''

परतंत्र भारत में सबसे पहले यह विचार निर्भीकता एवं स्वप्रेरणा से प्रकट करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे जिन्होंने आजादी की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप सन् १८५७ से स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत हो गई थी। बाद में देशी रियासतों के शासकों ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया। कई सेनानी स्वतंत्रता के संग्राम में कूद पड़े यथा सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, ऊधमसिंह, राजगुरु, सुखदेव, रोशन लाल आदि ने अपने प्राण त्याग दिये।

राजनैतिक स्वरूप के अहिंसक आंदोलन में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लालबहादुर शास्त्री, दादाभाई नौरोजी, मौलाना आजाद, सरोजिनी नायडू, डा. राधा कृष्णन्, डा. जाकिर हुसैन, डा. भीमराव अंबेडकर, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, एन. संजीव रेड्डी, चितरंजन दास, गोपालकृष्ण गोखले, पं. मदन मोहन मालवीय, गोविन्द वल्ल पंत, डा. राजेन्द्र प्रसाद, जय प्रकाश नारायण, फखरुद्दीन अली अहमद, एनी बीसेन्ट, मोरारजी देसाई, बी.डी. जत्ती आदि ने भाग लिया, जेल यातनायें सहीं। दूसरी ओर लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, बिपिन चन्द पाल, लाला लाजपतराय, सुभाष चन्द्र बोस ने अपने-अपने प्रकार से अंग्रेजों के पैरों तले जमीन खिसका दी थी।

महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद के साथ ही समाज सुधार का बहुत बड़ा आन्दोलन गुरु विरजानन्द की प्रेरणा से हाथ में लिया। समाज में कुरीतियाँ व अंधविश्वास घर कर गये थे। सर्वत्र समाज में अंधकार छाया हुआ था, उसे मिटाने के लिए विधवा स्त्री विवाह चालू करवाया, बालविवाह बन्द करने की प्रेरणा दी, गौ संरक्षण एवं छुआछूत मिटाने हेतु चारों वर्ण व्यवस्था की मर्यादा बतलाई। जादू, टोने, टोटके मिटाने की प्रेरणा दी व एक ही परमपिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था एवं उपासना की प्राप्ति के लिए अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना की। बाद में इन्हीं सुधारों के विषय में भी महात्मा गाँधी ने पहल करके अपने जीवन में उतारा व लोगों को भी प्रेरणा दी, भारत का संविधान जो २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ, उसमें भी इन्हीं सुधारों को प्राथमिकता मिली जिन्हें गाँधीजी ने अपनाया व सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने उद्घोषित किया था।

पराधीनता के इतिहास में सन् ११९३ में पृथ्वीराज चौहान को हरा कर शाहबुद्दीन ने दिल्ली में मुसलमानों का राज्य स्थापित किया, जो सन् १७५७ तक चला। जिसमें कई खूंखार व खूनी शासकों ने ५६४ वर्ष तक मारकाट मचाई। बाद में अंग्रेजों ने सन् १९४७ तक १९० वर्ष के शासन में भारत से सोने की चिड़िया चुराली व देश को कंगाल बना दिया।

आज हम भारत में सांस ले रहे हैं। हमें राजनीति में भाग लेकर संसद द्वारा किये जा रहे सुधार कार्यक्रमों में व कानून बनाने में हिस्सा लेना चाहिए। संसद में जब प्रकाशवीर शास्त्री (आर्य विचारक) का भाषण होता था तब संसद में पूर्ण रूप से शान्ति रहती थी व सांसद बड़े ध्यान पूर्वक उनका भाषण सुनते थे। आज संसद में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पहुँचे हैं तो उनका लाभ भी पूरे भारत वर्ष को प्राप्त होगा।

कर्हि स्वित्तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ।
कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः॥

– ऋग्वेद ४/७/३

अर्थ- हे इन्द्र (राष्ट्राध्यक्ष) आपके सुशासन में धन वृद्धि, पूर्ण बुद्धिमता एवं उत्तम क्रिया कलापों को लागू कीजिये, जिससे प्रजा का भला हो।

अब हम १५ अगस्त १९४७ से हर साल भारतीय स्वतंत्रता दिवस एवं २६ जनवरी सन् १९५० से भारतीय संविधान लागू होने का गणतंत्र दिवस मनाते आ रहे हैं। १५ अगस्त को लाल किले पर प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाता है और राष्ट्र को संबोधन देते हैं, जिसमें भावी नीतियों की झलक दिखलाई पड़ती है। २६ जनवरी को दिल्ली जन पथ पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। जिसमें देश विदेश के मेहमान, पदाधिकारी, नेता, गणमान्य लोग व आम जनता भी शरीक होती है। कार्यक्रम में मिलिट्री परेड, घातक हथियार प्रदर्शन, प्रदेशों की

सांस्कृतिक झाँकियों, वीर बालकों की सवारी, लड़ाकू विमानों आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं मेडल वितरण किये जाते हैं।

स्थानीय स्तर पर भी ये दोनों कार्यक्रम प्रदेश व जिला स्तर पर सरकारी कार्यालयों व सरकारी एवं निजी विद्यालयों में बड़े उत्साह के साथ सरकारी आदेशानुसार मनाये जाते हैं। इनाम, प्रशंसा-पत्र व मिठाइयाँ भी खूब बाँटी जाती हैं। लेकिन अफसोस की बात यह है कि जनता जनार्दन ने ये पर्व अपने स्तर पर स्वीकार नहीं किये हैं। कितना अच्छा होता यदि भारत का हर

नागरिक अपने घर-संस्थान में तिरंगा झंडा फहराता, राष्ट्रीय गान गाता व मिठाई बाँटता। कुछ लोग तो यह भी मानते है कि तिरंगा झंडा तो कांग्रेस का है, इससे हमारा क्या लेना देना। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि तिरंगा झंडा ऊपर से केशरिया बहादुरी का, नीचे हरा हरियाली खेती का एवं बीच में सफेद शान्ति का प्रतीक है, जिसके बीच में अशोक चक्र की २४ पंखुड़ियाँ होती हैं व कुल साइज २:३ का अनुपात रहता है। कांग्रेस के झंडे में तिरंगे के बीच में हाथ के पंजे का निशान है। अलग-अलग राजनैतिक दलों के अलग-अलग प्रकार के झंडे हैं, वैसे ही धार्मिक पन्थों के भी तरह तरह के झंडे हैं। राष्ट्रीय ध्वज के अलावा सभी प्रकार के झंडे चौबीसों घण्टे लहराते रहते हैं। जहाँ तक राष्ट्रीय ध्वज का प्रश्न है वहाँ पार्टी अपना झंडा नहीं लगाकर केवल राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा ही फहरायेगी वह भी सुबह शाम सूर्यास्त तक ही, चाहे न्यायालय हो अथवा प्रशासनिक भवन।

हमारे आर्य समाज एवं उच्च संस्थाओं में राष्ट्रीय पर्व पर तिरंगा ध्वज फहराने का रिवाज नहीं है। हाँ अगर कहीं किसी ने पर्व मना भी लिया तो उसका उल्लेख सामने नहीं आता। हमने केवल 'ओ३म्' का भगवा झंडा ही मान रखा है। कहने को तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ८० प्रतिशत लोग जो शहीद हुए व यातनाएँ सहीं वो आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित थे। हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ चढ़कर हिस्सा लिया था तो उसका प्रतिफल राष्ट्रीय पर्व मनाने में पीछे क्यों रहें? हम भारतवासी जैसे होली, दिवाली, ईद-उल-फितर, गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, क्रिसमस डे, लोहड़ी, दुर्गाष्टमी आदि पर्व बड़े उत्साह से मनाते हैं, वैसे ही राष्ट्रीय पर्व क्यों नहीं मनाते? क्या हममें किसी प्रकार की कोई राष्ट्रीयता की कमी तो नहीं है? हमें इस विषय में गंभीरता से सोच विचार की आवश्यकता है।

अब इसी माह में यह पर्व १५ अगस्त का सामने है। हमें प्रयत्न करके हर आर्य समाज, आर्यवीर दल शाखा एवं उच्च स्तरीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में राष्ट्रीय पर्व मनाने की शुरूआत करनी चाहिए। देर आयद, दुरुस्त आयद। हमने सारे संसार को आर्य बनाने का बीड़ा उठा रखा है, तो हमें सबसे पहिले हमारी उच्च कोटि की राष्ट्रीयता प्रस्तुत करनी चाहिए। अतः सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि उक्त पर्व को पूर्ण श्रद्धा के साथ मनावें और इसका अच्छी तरह प्रसार-प्रचार भी उपलब्ध साधनों मीडिया, पत्र-पत्रिकाओं आदि के द्वारा करावें एवं अपने विचार प्रस्तुत करावें।

- नरसिंह सोलंकी
मंत्री, आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर
सेवा निवृत, शाखा प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम

परहित कारण जन्म लिया, किया है सार्थक अपना नाम।
सुखों के दाता, दुःखहर्त्ता, किये आपने अनगिन शुभ काम।
उच्चकोटि के सफल, कुशल चिकित्सक हो।
रोगी पीड़ित दीन-दुःखी ने,
जब भी कभी पुकारा।
दिया सभी को नया सहारा,
पर-पीड़ा को अपनी जान।
दानवीरता करुणा प्रेम से, तन-मन-धन से
जन-गण पर उपकार किया।
दलितों का उद्धार किया।
देश-विदेश में फैलाया,
ऋषि सन्देश, वेदों का ज्ञान।
वैदिक-धर्म प्रचार किया, किया सर्वजाति कल्याण।
आर्य समाज के स्तम्भ हैं आप,
प्रेरक सुधारक उद्धारक हैं आप।
ऊँच-नीच न भेद भाव,
सबको ही गले लगाया।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, जीवन का लक्ष्य बनाया।
सर्वत्र आपका है गुणगान,
है प्रख्यात् व्यक्तित्व महान्।
स्वस्थ रहें निरोग रहें,
होवें आयुष्मान।
जन्म-दिन के शुभ दिन पर, हार्दिक बधाई स्वीकार हो।
हर वर्ष के दिन एक हजार हों।
सुख ऐश्वर्य आनन्द से,
भरपूर रहे परिवार।
खुशियों की बहारें सदा ही रहे,
आपका सुखी बसे संसार।

"सस्नेह- शीला सेठी"

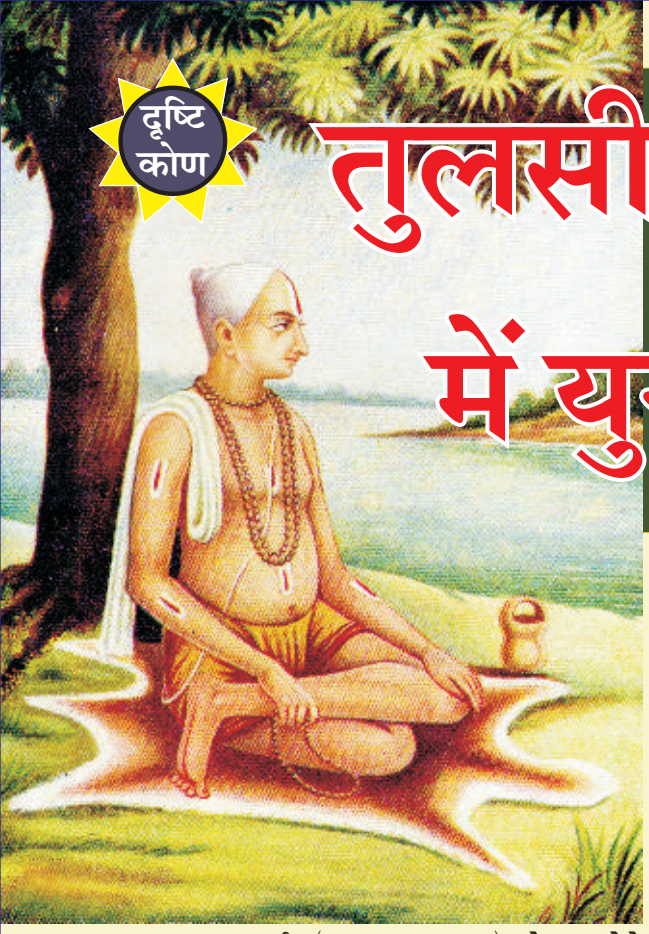

दृष्टि कोण

तुलसी के काव्य में युग संदर्भ

राधे श्याम धूत

श्रावण शुक्ल सप्तमी (३ अगस्त २०१५) को एक ऐसे महाकवि की जयन्ती है जिनका कृतित्व जितना विलक्षण है, उतना ही उनका व्यक्तित्व भी। उन्हें बचपन में ही अपने माता-पिता का घर छोड़कर दर-दर भटकना पड़ा था। उनके पास रहने को न तो कोई ठौर था न आजीविका का कोई साधन। इसलिए उन्हीं के शब्दों में, **'माँगिके खइबो, मसीत को सोइबो** (माँग के खाना, मस्जिद में सोना)' ही उनके प्रारम्भिक जीवन का आधार था। वे कभी चैन की नींद भी नहीं सो सके थे- **'कबहु न नाथ नींद भरि सोयो।'** क्योंकि रामराज्य की स्थापना के अभियान में उन्हें एक ओर धर्म के ठेकेदारों का सामना करना पड़ता था तो दूसरी ओर विधर्मी शासकों के आतंक का। लेकिन उनके व्यक्तित्व की विलक्षणता देखिये कि जीवन में इतने थपेड़े सहते हुए भी उस महामानव ने शाश्वत साहित्य के रूप में समाज को जो बौद्धिक सम्पदा दी है, उसका समानान्तर उदाहरण दुर्लभ है। उनके व्यक्तित्व की एक और विशेषता यह है कि इन प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद उनके मन में न तो रोष का भाव था, न किसी के प्रति शिकायत का। क्योंकि उन्हें राम का आश्रय मिल गया था-

'कासों कीजे रोषु, दीजे दोषु काहि, पाहि राम'।

वे महापुरुष हैं, गोस्वामी तुलसीदास, जिनका जन्म विक्रम संवत १५५४ (ईस्वी सन् १४९७) में श्रा.शु. सप्तमी के दिन हुआ था। तुलसी के प्रशंसक उन्हें भक्त कवि के रूप में ही मानते हैं। लेकिन अनेक विद्वान् उन्हें लोकनायक मानते हैं। इनमें प्रमुख हैं जॉर्ज ग्रियर्सन। मेरी दृष्टि में तुलसी दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति और कूटनीति में भी पूर्णतया निष्णात थे। लोकनायक की भूमिका में गोस्वामी जी के अवदान का महत्व समझने के लिए उनके युग और तत्कालीन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।

तुलसी के जन्म के पूर्व ही उत्तर भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों का शासन स्थापित हो चुका था। इन धर्मान्ध आक्रान्ताओं द्वारा विगत् लगभग दो शताब्दियों से हिन्दुओं पर किए गए भीषण अत्याचारों का तथा हिन्दू देवालयों व पवित्र स्थानों को ध्वस्त किए जाने का क्रम, न्यूनाधिक रूप में तुलसी के जीवनकाल तक जारी था। लेकिन तुलसी ने, संभवतः कुछ राजनैतिक कारणों से, राजसत्ता के इस धर्मान्ध रूप का वर्णन कवितावली में अत्यन्त संक्षेप में किया है। तुलसी कहते हैं, इस कठिन समय में शासक दयाहीन हो गए हैं, राज समाज बड़ा ही धोखेबाज हो गया है- **'कालु कराल, नृपाल कृपाल न, राज समाज बड़ो ही छली है।'** तत्कालीन समाज का चित्रण करते हुए, गोस्वामी जी बताते हैं कि किसान के पास खेत नहीं है, भिखारी को भीख नहीं मिल रही है, व्यापारियों के पास व्यापार नहीं है। जीविका नहीं मिलने के कारण लोग दुःखी हो रहे हैं। यहाँ प्रसंगवश उल्लेख करना उचित होगा कि तुलसी के जीवन का सर्वाधिक लगभग ५० वर्ष बादशाह अकबर के शासन काल में बीता था। कवितावली का प्रणयन

भी इसी काल में हुआ था। इसलिए स्वाभाविक है कि उपरोक्त वर्णन अकबर के शासनकाल का ही रहा होगा। यदि ऐसा है तो अकबर की कथित महानता पर प्रश्नवाचक चिह्न लग जाता है। इसी क्रम में एक और अहम् प्रश्न पैदा होता है। तुलसी ने राज समाज के लिए 'बड़ो ही छली' शब्द प्रयोग किये हैं। विनय-पत्रिका में भी तुलसी यही भाव दोहराते हैं- राज समाज अनेक कुचालों से भर गया है। वे नित नई कुचालें चला रहे हैं। क्या इनका अर्थ यह है कि अकबर की हिन्दुओं के प्रति तथाकथित उदार नीति केवल छल और कुचाल थी? यह गहनशोध का विषय है। विशेष तौर से इसलिए भी क्योंकि कुछ विद्वानों की मान्यता है कि भारत का मध्यकालीन इतिहास हिन्दू इतिहासकारों द्वारा लिखा देखने में नहीं आता है। जो ऐसा मानते हैं, उन्हें गोस्वामी तुलसीदास की कृतियों को टटोलना चाहिए। मुझे विश्वास है उन्हें तुलसी का इतिहासकार रूप भी नजर आने लगेगा।

तुलसी की कृतियों के अध्ययन से आभास होता है कि वे राजसत्ता के संस्कृति विरोधी तथा दमनकारी रूप से बहुत ज्यादा व्यथित थे। इस संदर्भ में प्रश्न उठ सकता है कि उन्होंने विधर्मी शासकों के विरुद्ध विद्रोह का शंखनाद क्यों नहीं किया? क्या तुलसी स्वयं शासन से भयभीत थे? क्योंकि

गंग कवि का उदाहरण उनके सामने था, जिन्हें उनके विरोधी स्वरों के कारण हाथी के पैरों से कुचलवा दिया गया था। मेरा अनुमान है कि तुलसी ने राजनैतिक सूझबूझ व कूटनीति काम में लेते हुए, गंग कवि की भाँति शहीद हो जाने की बजाय, परोक्ष रूप से व रूपकों के माध्यम से जनता को जागृत करना अधिक उपयुक्त समझा होगा, जिससे शासन की नजरों से बचा जा सके।

लोकनायक की भूमिका का निर्वाह करते हुए तुलसी ने भारतीय समाज को निराशा और दिशाहीनता से मुक्त करने के लिए त्रेतायुग की रामकथा का आश्रय लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्रम में तुलसी ने सबसे पहले तत्कालीन निरंकुश शासकों से हो रहे संघर्ष को राम-रावण संघर्ष से जोड़ने का प्रयास किया। इसका संकेत बालकाण्ड में वर्णित रावण उत्पत्ति प्रसंग में मिलता है, जहाँ रावण द्वारा की गई घोषणा तथा तत्कालीन विधर्मी शासकों की नीति में अद्भुत समानता नजर आती है। वहीं जब तुलसी निशाचरों को परिभाषित करते हैं तब तो स्पष्ट लगता है मानो वे तत्कालीन समाज विरोधी तत्वों की ही चर्चा कर रहे हैं। यहाँ ध्यान देने लायक बात है कि तुलसी अपने राम से केवल एक ही प्रण कराते हैं- वह है धरती को इन निशाचरों से मुक्त करने का **'निशिचरहीन करौं मही भुज उठाइ प्रन कीन्ह।'** तुलसी ने जनता को आश्वस्त किया कि राम के पथ पर चलने से रामराज्य स्थापित हो जायेगा, जिसमें न भय होगा न शोक और न रोग। इस दृष्टि से तुलसी ने भगवान राम का ऐसा स्वरूप चित्रित किया, जिसके साथ जन साधारण भी कदम से कदम मिलाकर चल सके। तुलसी के राम राजा होते हुए भी प्रजातन्त्रीय प्रणाली में विश्वास करते हैं। वे शास्त्र, नीति व कूटनीति के साथ-साथ लोकमत को भी समान महत्व देते हैं। तुलसी ने गाँव-गाँव में रामलीलाओं का मंचन करा जन-जन तक अपना संदेश पहुँचाने का प्रयास किया। तुलसी भारत को विदेशी शासकों से मुक्त तो नहीं करा सके, लेकिन उनके प्रयासों से हिन्दू समाज का खोया हुआ आत्मबल और विश्वास लौट आया जिससे धर्मान्तरण रुक गया और संस्कृति की रक्षा हो गई।

रामराज्य के लिए जितना महत्व स्वराज्य का है, उतना ही स्वस्थ समाज का। इसलिए तुलसी ने रामराज्य की एक ऐसी अभिनव अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें सब लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहें तथा देश की स्वस्थ परम्पराओं व नीति के अनुसार अपने-अपने धर्म का पालन करें- **'सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत रति नीति।'** यह भारतीय सैक्यूलरिज्म का ज्वलन्त उदाहरण है।

समाज के विघटन का सबसे बड़ा कारण होता है, जाति-पाति, छूत-अछूत तथा छोटे-बड़े का भेदभाव। तुलसी के समय में ये सभी कुरीतियाँ अपनी जड़ें जमा चुकीं थीं। आज भी हमारा समाज इसी रोग से जर्जरित हो रहा है। इसलिए तुलसी ने सबसे कड़ा प्रहार जाति-पाति पर ही किया है। तुलसी निश्चय ही वर्णाश्रम धर्म के समर्थक थे। लेकिन वे वर्णाश्रम व्यवस्था के तात्विक रूप के प्रतिपादक थे विकृत रूप के नहीं। तुलसी वर्ण आधारित भेदभाव के भी विरोधी थे। असल में उनका सारा प्रयास शास्त्रीय मर्यादा तथा लोक व्यवहार में समन्वय स्थापित करना था।

इस संदर्भ में रामचरितमानस का एक लोकप्रिय प्रसंग देखें। राम-वनवास के समय केवट अपना परिचय देते हुए महर्षि वसिष्ठ को दूर से ही प्रणाम करता है- **'प्रेम पुलकि केवट कहि नामू, कीन्ह दूरितें दण्ड प्रनामू।'** लेकिन वसिष्ठ तात्कालीक सामाजिक मान्यताओं को नजरअंदाज करते हुए केवट को जबरदस्ती गले लगा लेते हैं- **'रामसखा ऋषि बरबस भेंटा।'** वस्तुतः जीवन में इसी के सामञ्जस्य की नितान्त आवश्यकता है।

तुलसी के कुछ आलोचक उन्हें ब्राह्मणवादी और सामन्तवादी भले ही मानते हों, किन्तु वास्तविकता यह है कि तुलसी के हृदय में दीन, दुखियों व दरिद्रों के प्रति जितनी वेदना थी उतनी किसी अन्य वर्ग के प्रति नहीं थी। केवल वेदना ही नहीं, दरिद्रता रूपी रावण से दुनिया को दबाया हुआ देख तुलसी का हृदय हाहाकार कर उठता है- **'दारिद दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु! दुरित दहन देखि तुलसी हाहाकरी'** तुलसी के समय के कवियों की बात तो छोड़ दें, आज कितने तथाकथित प्रगतिशील साहित्यकारों का हृदय हाहाकार करता है, यह विचारणीय है। इतना ही नहीं, तुलसी तो उन सीताराम की वन्दना करते हैं जिन्हें दीन दुःखी ही परम प्रिय हैं- **'बन्दउ सीताराम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न।'**

तुलसी धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में व्याप्त विकृतियों से भी अत्यन्त व्यथित थे। वे देख रहे थे कि सर्वत्र असत्य और हिंसा का बोलबाला है। इसलिए तुलसी ने अहिंसा व सत्य का महत्व बताते हुए घोषणा की कि अहिंसा ही परम धर्म है। **'परम धरम श्रुति विदित अहिंसा'** तथा सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है- **'धरम न दूसर सत्य समाना।'** धर्म व कर्मकाण्ड की जटिलताओं से ग्रस्त तथा पाप-पुण्य की काल्पनिक व्याख्याओं में उलझे समाज को तुलसी ने बताया कि दूसरों का भला करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है तथा औरों को तकलीफ देने से बड़ा कोई पाप नहीं है-

'परहित सरिस धरम नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

गोस्वामी जी की एक असाधारण विशेषता है- अभिव्यक्ति की कला। वे अपनी बात प्रभावशाली तरीके से कहते हैं पर बिना किसी की भावनाओं को आहत किए। उससे उन लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर लोगों की भावनाओं को अकारण ठेस पहुँचाते रहते हैं। तुलसी कला के लिए कला सिद्धान्त को यथावत् स्वीकार नहीं करते हैं। वे उसी कृति को श्रेष्ठ मानते हैं जो गंगा की भाँति सबके लिए हितकारी हो-

'कीरति भनिति भति भलि सोई,
सूरसरि सम सब कहं हित होई।'

ध्यान देने लायक बात है कि तुलसी ने अपने नाम अथवा अपने सिद्धान्तों/दर्शन के आधार पर कोई सम्प्रदाय या पंथ नहीं चलाया। न उन्होंने किसी मठ या आश्रम की स्थापना की। फिर भी आज पाँच सौ वर्ष बाद भी तुलसी जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित हैं।

किन्तु यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि हमने गोस्वामी के शब्दों में निहित सन्देश को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझने का वाञ्छित प्रयास नहीं किया है। तुलसी के कुछ अध्येता तो उनके साहित्य में भक्ति की ही प्रधानता देखते हैं। कुछ लोग उनकी कृतियों को सांस्कृतिक सुख प्राप्त करने के लिए अनुष्ठान या पारायण का साधन मात्र मानते हैं। इस प्रकार तुलसी का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक चिन्तन हमारी दृष्टि से प्रायः ओझल रह जाता है। हम सभी जानते हैं कि रामराज्य की स्थापना के लिए तुलसी ने जिन निशाचरों के आतंक, जिस जाति पातिगत भेदभाव तथा गरीबी के विरुद्ध अभियान चलाया था, वे सब आज भी किसी न किसी रूप में समाज को पीड़ित कर रहे हैं। इसलिए तुलसी जयन्ती के पावन अवसर पर इन विकृतियों से मुक्ति का संकल्प ही लोकनायक तुलसीदास के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

जेकब रोड, सिविल लाइन्स, जयपुर- ३०२००६
मोबाइल- ०९८२९०६३१२३

'ऋषयों मंत्र दृष्टार:' अर्थात् मनुष्यों की वह श्रेणी जो मंत्र-दर्शन-सामर्थ्य से युक्त होती है, ऋषि कहलाती है। यह सामर्थ्य इनमें या तो जन्मसिद्ध होता है या फिर प्रयत्नसिद्ध। इस सामर्थ्य से ये लोग सृष्टि के सभी पदार्थों का ज्ञान हस्तामलकवत् साक्षात् कर लेते हैं। प्रत्येक सृष्टि की आदि में मानवों के उद्धार को लक्ष्य करके परमेश्वर इन ऋषियों के माध्यम से ही ज्ञान और भाषा का प्रकाश करता है। इन ऋषियों की तीन श्रेणियाँ होती हैं।

१. दिव्यर्षि २. श्रुतऋषि ३. कृत प्रयत्न ऋषि

आचार्य यास्क ने इनका वर्णन इस प्रकार किया है-

''साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृत धर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदाङ्गानि च''।।

- निरुक्त १/२०

इन ऋषियों ने अपने पवित्र अन्तःकरण में प्रादुर्भूत परमेश्वर के दिव्य ज्ञान एवं दिव्य भाषा का मानवों में सर्वत्र प्रचार-प्रसार

किया। परमेश्वर की उपासना और तपस्या के द्वारा वेदमंत्रों के अर्थों का साक्षात्कार करके लोक में प्रकाशित किया। वेद में इसका उल्लेख इस प्रकार है-

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।

- अथर्ववेद १९/४१/१

इन्हीं ऋषियों ने वेदविरोधी जनों द्वारा वेदों पर किए गये प्रहारों और आक्षेपों का मुँहतोड़ उत्तर देने में समर्थ शास्त्रों का प्रणयन करके वेदों की और वैदिक समाज की रक्षा भी की। उनका किया गया यह श्रम और तप उनके स्वयं के लिए न होकर भावी पीढ़ी के मानवों के लिए ही था। अतः मनुष्यमात्र के ऊपर उनका इतना ऋण है कि उसे चुकाया नहीं जा सकता। कितनी ही कृतज्ञता व्यक्त की जाय वह न्यून ही होगी। इसलिए उन्होंने जिस कामना और भावना से, जिस पवित्र उद्देश्य से निज जीवन को समर्पित किया, हमें भी उसी के अनुसार उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान वेद-वेदाङ्गादि की रक्षा तथा प्रचार-प्रसार करना चाहिए, तभी उनका श्रम सार्थक होगा और तभी मानवमात्र का कल्याण भी हो सकेगा। इसके लिए हम आवश्यक तप और दीक्षा को स्वीकार करें और आलस्य प्रमाद त्याग कर प्राणपण से कार्य करने का व्रत लें। यही ऋषि तर्पण है।

वेदों की रक्षा और ऋषियों का ऋण चुकाने का एक ही उपाय है, वह है 'स्वाध्याय और प्रवचन' अर्थात् अध्ययन और अध्यापन। राजर्षि मनु ने इसे ही ऋषियज्ञ और ब्रह्मयज्ञ की संज्ञा प्रदान कर पंचमहायज्ञों में से प्रथम स्थान दिया है। यथा-

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।। - मनु. ४/२१

आगे कहा- **स्वाध्यायेनार्चयेत् ऋषीन्।** - मनु. ३/८१

अर्थात् स्वाध्याय के द्वारा ऋषियों का अर्चन करें। पुनः कहा:- **'अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः'** अर्थात् पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ है।

शतपथ कहता है **'स्वाध्यायो वै ब्रह्म यज्ञः'** अर्थात् स्वाध्याय ही ब्रह्मयज्ञ है। इसीलिए गुरुकुलों में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य स्नातकों को दीक्षान्त उपदेश में अन्य उपदेशों के साथ यह भी कहता था कि- **'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'। 'स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्'** (तैत्तिरीयोपनिषद् ११/१) शतपथकार स्वाध्याय को परमश्रम कहता है-

'ये ह वै के च श्रमाः। इमे द्यावापृथिवीऽअन्तरेण स्वाध्यायो हैव तेषां परमता काष्ठा'।। - शत.११-५-७-२

एक स्थान पर कहता है- **यदि ह वा अप्यभ्यक्तः। अलंकृतः सुहितः सुखे शयने शयानः स्वाध्यायमधीतऽआ हैव स नखाग्रेभ्यस्तप्यते।** - शत.११-५-७-४

अर्थात् यदि कोई तेल फुलेल और अलंकारों से सज-धज कर आसन पर बैठ अथवा सुखपूर्वक लेटकर भी स्वाध्याय करता है, तो समझो वह नखाग्र तक से परम तप कर रहा है।

मनु महाराज ने भी ऐसा ही कहा है-

आ हैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः।
यः स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायः शक्तितोऽन्वहम्। - मनु. २/१६७

अर्थात् सुगन्धित पुष्पमाला धारण करके भी जो द्विज स्वाध्याय

करता है व नखाग्र पर्यन्त तप करता है। क्योंकि-

वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते।। - मनु. २-१६६

वेदाभ्यास ही ब्राह्मण का परम तप कहा जाता है।

महाभाष्यकार ने तो इसे ब्राह्मण का निष्कारण धर्म बताया है यथा- 'षडङ्गो वेदोऽध्येयः ज्ञेयश्च ब्राह्मणस्य निष्कारण धर्मः।।'

अर्थात् छः अंगो सहित वेदों का अध्ययन और अर्थज्ञान ब्राह्मण का अकारण ही धर्म है, जिसका पालन उसके लिए अनिवार्य है। मनु कहते हैं-

'सर्वान्परित्यजेदर्थान्स्वाध्यायस्य विरोधिनः।।' - मनु. ४/१७

अर्थात् स्वाध्याय विरोधी सभी अर्थों को त्याग देना चाहिए।

मनु ने गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासी के लिए भी स्वाध्याय का विधान किया है। देखिए गृहस्थ के लिए-

बुद्धिवृद्धिकराण्याशु धन्यानि च हितानि च।
नित्यं शास्त्राण्यवेक्षेत निगमांश्चैव वैदिकान्।। - मनु. ४/१६

अर्थात् बुद्धि वृद्धिकर, धन और हित के शीघ्र साधक शास्त्र हैं, उनका नित्य पठन, श्रवण व मनन करें जिनका वेद में विधान है। वानप्रस्थ के लिए कहा- 'स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्यात्।।

अर्थात् नित्य स्वाध्याय में लगा रहे। संन्यासी के लिए कहा-

'सन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न सन्यसेत्'।।

अर्थात् सब कर्मों से संन्यास ले परन्तु एक वेद ही है जिससे कभी संन्यास न ले। महर्षि दयानन्द ने कहा- 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

अतः श्रावणी उपाकर्म या रक्षावन्धन का पर्व ऋषि तर्पण और वेदरक्षा का व्रत ग्रहण करने का पर्व है। आज के दिन से ब्राह्मणगण ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए वेदों के स्वाध्याय व प्रवचन का व्रतग्रहण पूर्वक प्रारम्भ करते हैं। जैसा कि आश्वलायन गृह्य सूत्र के टीकाकार नारायण लिखता हैं कि- अध्ययनं अध्यायस्तस्योपाकरणं प्रारम्भो येन कर्मणा तदध्यायोपाकरणम्'।

अध्याय का अर्थ करते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैंः-

''अधीयन्ते इति अध्याया वेदाः तेषामुपाकर्म उपक्रमम्।।

अर्थात् अध्याय का अर्थ वेद है उन्हीं का प्रारम्भ उपाकर्म या उपक्रम है। अब प्रश्न हो सकता है कि जिस स्वाध्याय को परमश्रम, परमतप और परमधर्म कहकर इतनी प्रशंसा की गई है, उसके करने से मात्र ऋषि तर्पण ही होता है या कुछ अन्य लाभ भी होता है इसके उत्तर में वैदिक ऋषियों का कहना है कि अविद्या या अज्ञान ही सब प्रकार के दुःखों का मूल कारण है और विद्या या ज्ञान ही एक मात्र तत्व है जो मनुष्य को दुःखों से मुक्त कराता है। अतः ज्ञान की महिमा खूब गाई गई है। यथा-

१. ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
२. विद्ययाऽमृतमश्नुते।
३. नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रिमिह विद्यते।
४. सर्वेषां दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
५. विद्या धनं सर्व धनं प्रधानं। इत्यादि

महाराज मनु कहते हैं कि यह स्वाध्याय से ही सम्भव है। उनके अनुसार-

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।। - मनु. ४/२०

जैसे-जैसे मनुष्य शास्त्रों को यथावत जानता है, वैसे-वैसे उस विद्या का विज्ञान बढ़ता जाता है और उसी में रुचि बढ़ती जाती है।

शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए उसके लाभ बताए गए हैं। यथा-

अथातः स्वाध्याय प्रशंसा। प्रिये स्वाध्याय प्रवचने भवतो युक्तमना भवत्यपराधीनोऽहरहरर्थान्साधयते सुखꣳ स्वपिति परमचिकित्सक आत्मनो भवतिन्द्रियसंयमश्चैकारामता च प्रज्ञावृद्धिर्यशो लोकपक्तिः।। - शतपथ. ११-५-७-१

अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन प्रिय ब्राह्मण युक्तमन (एकाग्रचित्त) हो जाता है। स्वाधीन रहते हुए प्रतिदिन अर्थों को प्राप्त करता है, सुख से सोता है, आत्मा का परम चिकित्सक हो जाता है, जितेन्द्रिय होकर आत्मस्थ हो एकाकी ही रम जाता है, बुद्धि बढ़ती है, यश और लोक का परिपाक होता है। लोक का परिपाक होने से लोग उसकी अर्चना करते हैं, उसे दान करते हैं, उसे अजेय और अवध्य मानकर उसके पक्के भक्त, प्रशंसक और अनुयायी हो जाते हैं।

महर्षि व्यास ने क्रिया योग के प्रथम साधन के रूप में स्वाध्याय को स्थान दिया है।

वे कहते हैं मनुष्य को स्वाध्याय से अभीष्ट विषय सिद्ध हो जाते हैं, और स्वाध्याय तथा योग के सम्पादन से परमात्मा भी प्रकाशित हो जाता है।

१. 'स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः'। - योग. २/४४
२. स्वाध्यायात् योगमासीत् योगात् स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याय योग सम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते।।

अतः स्वाध्याय एक ऐसा साधन या कर्म है जिससे मनुष्य के अभ्युदय और निःश्रेयस, लोक-परलोक, भोग और मोक्ष दोनों

ही सिद्ध हो जाते हैं। यही कारण था कि प्रत्येक ब्राह्मण स्वाध्याय को परमधर्म मानकर ज्ञान की शाश्वत् अक्षय निधि वेद की रक्षा, उनका प्रचार-प्रसार करने में प्राणप्रण से तत्पर रहता था। स्वसामर्थ्यानुसार एक वेद, एक वेदाङ्ग अर्थात् वेद का कोई न कोई भाग ग्रहण करके उसका पठन-पाठन करता, भावी पीढी का निर्माण कर उसे दाय भाग में वही दायित्व सौंपकर संसार से विदा लेता था।

इस प्रकार विद्याओं की रक्षा के लिए सम्प्रदाय होते थे जिनके द्वारा विद्याओं की रक्षा, अनुसन्धान, विकास आदि कार्य होते रहते थे। इससे समाज अज्ञानमुक्त और सुखी रहता था।

वर्तमान के सम्प्रदाय अज्ञान, अशान्ति, कलह, पाखण्ड, ठगी, व्यभिचार, अर्थ दूषण फैलाने और श्रम का अनादर करने वाले हैं। ये मनुष्य समाज के लिए कलंक बनकर रह गये हैं जिनसे छुटकारा पाना कठिन हो गया है। ब्राह्मणों के स्थान पर मूढ़, धूर्त साधु-संत तथाकथित गुरुओं का बोलबाला है और स्वाध्याय प्रवचन के नाम पर अनार्ष, अवैदिक ग्रन्थों की मिथ्या कथाओं और समाज का चरित्र हनन करने वालों तथा कथित ज्ञान यज्ञों की भरमार है। ऐसे में वेद की रक्षा कैसे होगी? आर्य समाज के नेताओं और विद्वानों को इस पर गम्भीर होकर विचार और उपाय करने का समय आ गया है।

'को वेदानुद्धरिष्यति?'

सीताबाड़ी रोड़, केलवाड़ा
जिला- बॉरा

वेद स्वाध्याय सत्सङ्ग करते रहो
एक दिन प्राप्त सद्ज्ञान हो जाएगा।
भ्रान्ति मिटके परम शान्ति मिल जाएगी
पाप-तापों का अवसान हो जाएगा।।
"श्रावणी एवं रक्षाबन्धन"
के पावन पर्व पर आएँ
हम सभी वेद-स्वाध्याय का व्रत लेवें।
सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती
न्यासी

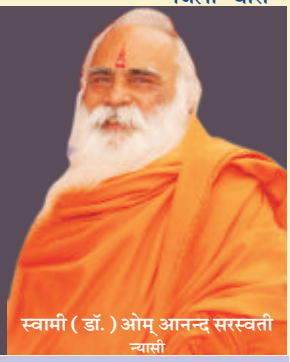

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१९

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१		१ व	■	■	■	२	र्ग	२	■	■
३	ल	३	■	■	४ य		४		४ त	■
५	प	■	६	६ गों	■	७	ह	७	वा	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. पदार्थविद्या के अनुसार किसी द्रव्य का क्या नहीं होता?

२. हवन करने से किस चीज की निवृत्ति होती है?

३. होम में प्रत्येक मनुष्य को न्यूनातिन्यून कितनी आहुति देनी चाहिए?

४. पढ़ाने से पूर्व क्या आवश्यक है?

५. हवन न करें तो क्या होता है?

६. जब तक होम का प्रचार रहा आर्यावर्त्त देश किससे रहित रहा?

७. सुगन्धित पुष्प, इत्र आदि की सुगन्ध में सामर्थ्य नहीं कि वह घर के अन्दर से इस प्रकार की वायु को बाहर निकाल सके?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १७ का सही उत्तर

१. तुल्य २. नहीं ३. अध्यापक ४. विद्या ५. गायत्री मन्त्र ६. दण्ड ७. घर ८. परमेश्वर

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०१५

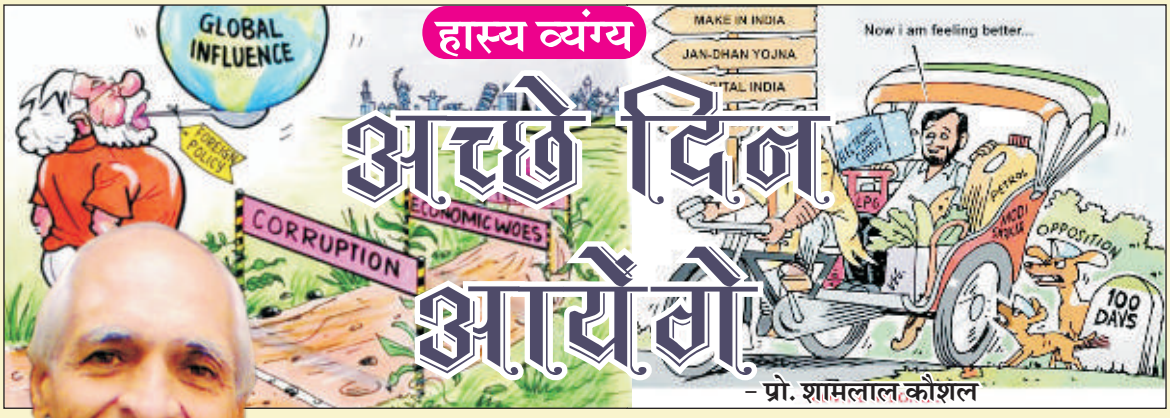

हास्य व्यंग्य

अच्छे दिन आयेंगे

– प्रो. शामलाल कौशल

हम सभी हमेशा अच्छे दिनों की आशा करते हैं। अच्छे दिनों का मतलब है कि हमारा स्वास्थ्य ठीक हो, घर में ढ़ेर सारा पैसा हो, सुख-शान्ति तथा समृद्धि हो। बीमारी, बेकारी तथा लाचारी कोसों दूर हो। हम जो भी काम करना चाहें बिना रुकावट के हो जायें। आदि, आदि का नाम ही तो अच्छे दिन होते हैं जिसका हर कोई सुनहरा सपना देखता है। १६ वीं लोकसभा के चुनावों से पहले भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी ने मतदाताओं को 'अच्छे दिन आयेंगे' का सपना दिखाया और उनका क्या कमाल जादू चला कि भाजपा को २८२ तथा राजग को केन्द्र में सरकार चलाने के लिए ३३५ सीटें मिल गईं। इस तरह नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बन गये और इन्होंने विभिन्न कार्यवाहियों तथा बयानों द्वारा लोगों को भरोसा दिलाने की कोशिश की कि अच्छे दिनों के आने की शुरूआत हो गई। अर्थात् देश में महंगाई, भ्रष्टाचार, बीमारी, बेकारी, अनपढ़ता, पीने का पानी तथा चिकित्सा की समस्याएँ दूर कर दी जायेंगी, प्रशासन में पारदर्शिता आयेगी, व्यवस्था में परिवर्तन होगा, आतंकवाद पर नियंत्रण कर लिया जायेगा, विकास प्रक्रिया तेज हो जायेगी तथा पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध सुधार लिये जायेंगे।

जब यह सारा कुछ होगा तो फिर अच्छे दिनों को आने से कौन रोक सकता है? लेकिन नई सरकार के इस सूर्योदय के बाद क्या-क्या होता है, एक वर्ष बाद भी जरा और प्रतीक्षा करो और देखो। एक हरियाणवी कहावत है क्या ब्याह के सारे गीत सच्चे हुआ करैं? कई लोगों का कहना है कि आम जनता के अच्छे दिन आयें या ना आयें लेकिन बी.जे.पी. के तो अच्छे दिन आ ही गये हैं।

यह तो रही बात भाजपा तथा राजग की। १६वीं लोकसभा के चुनावों में जिस तरह देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस को जबरदस्त शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा उससे तो लगभग सभी कांग्रेसी अपनी कमियों पर पश्चाताप के आँसू बहा रहे हैं। क्या उनके भी 'अच्छे दिन आयेंगे' कम से कम अगामी पाँच साल तक तो उनके अच्छे दिन नहीं आते। हाँ, आगे को जिन-जिन कांग्रेस शासित राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं वहाँ इस राष्ट्रीय पार्टी को अपनी साख बचाने के लिए सिर-धड़ की बाजी लगा देनी होगी।

अच्छे दिन आयेंगे कि नहीं यह तो अपनी-अपनी किस्मत की बात है। अच्छे दिनों के इन्तजार में लोग विवाह शादियाँ कराते हैं, हनीमून मनाते हैं लेकिन इस सारे का अन्जाम हम सभी अच्छी तरह जानते हैं। अधिकांश पति-पत्नि में आपस में बनती ही नहीं। लगता है जैसे उनकी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये साईकिल के और दो पहिये ट्रैक्टर के लग गये हों। बहुत सारे लोग तो ब्याह कराके सारी उम्र पछताते ही रहते हैं। घर में हमेशा कलह, क्लेश, मारपीट, शोर-शराबा, बर्तनों के टूटने की आवाजें ही आती रहती हैं। अच्छे दिन आयेंगे की इच्छा वाले पति-पत्नि यही कहते हैं कि 'मैंने ऐसा तो नही चाहा था।' बुढ़ापे में उ.प्र. के पूर्व मुख्यमन्त्री एन. डी. तिवारी तथा उज्ज्वला शर्मा ने विवाह तो यही सोच कर किया है कि अच्छे दिन आयेंगे तथा उनके बेटे शेखर को कानूनी तौर पर पिता तथा सम्पत्ति मिल जायेगी। म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री तथा कांग्रेस के तेज तर्रार जनरल सैक्रेटरी

दिग्विजय सिंह ने आखिर यह मान ही लिया कि उनका एक टी.वी. प्रैस रिपोर्टर महिला के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था और कि वह उसके साथ विवाह करके नये सिरे से घर गृहस्थी बसा लेंगे तथा उनके भी अच्छे दिन आयेंगे। लेकिन अच्छे दिन तो भाग्य से मिलते हैं। अब कभी भी किसी अपराधी को सजा मिलती है तो उसे जेल अर्थात् सुधारगृह भेज दिया जाता है। वहाँ उसे स्वावलम्बी बनाने के लिए कोई न कोई काम भी सिखाया जाता है ताकि जब वह सजा पूरी करके जेल से बाहर आये तो नये सिरे से जिन्दगी शुरू कर सके और उसके भी अच्छे दिन आयें। लेकिन बहुत सारे मामलों में बिल्कुल उसके उल्टा होता है। एक बार जो जेल में चला गया वह वहाँ अलग-अलग प्रकार के खूँखार अपराधियों से मिलता है और उसके अलग किस्म के ही अच्छे दिन आते हैं।

माँ बाप मेहनत, मजदूरी तथा त्याग द्वारा अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते, उनको अपने पैरों पर खड़ा कराते तथा उनका विवाह यह सोचकर करते हैं कि उनके भी अच्छे दिन आयेंगे। लेकिन नालायक औलाद माँ बाप की बुढ़ापे में सेवा तो क्या करनी है, उनकी धन सम्पति पर कब्जा करके उन्हें घर से निकाल देती है। माँ बाप बेचारे अच्छे दिन की तलाश में या तो फिर से जैसे तैसे अपने दम पर जिन्दगी शुरू करते हैं। अगर स्वास्थ्य ज्यादा खराब हो तो किसी वृद्धाश्रम में ही अच्छे दिनों की उम्मीद करते हैं। इस तरह हम सभी को अच्छे दिनों की तलाश तो है लेकिन वो दिन आयेंगे या नहीं आयेंगे, यह किस्मत की बात है।

मकान नं. ९७५-बी/२०
राजीव निवास, शक्ति नगर,
ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१ (हरि.)

कथा सरित

बुरी आदत

एक शहर में एक अमीर आदमी अपने बेटे के साथ रहता था और वह अपने बेटे की बुरी आदतों को लेकर बहुत परेशान था। उसने कई बार अपने बेटे को इस बारे में समझाने का प्रयास किया लेकिन हर बार उसके बेटे का जवाब होता कि पिताजी अभी तो मैं बहुत छोटा हूँ। धीरे-धीरे समय के साथ साथ मैं ये छोड़ दूँगा। लेकिन ऐसा कुछ भी परिवर्तन उसने खुद में नहीं किया और तो और वो बिगड़ता चला गया।

उन्ही दिनों उस शहर में एक महात्मा आये हुए थे जिनकी ख्याति बड़ी दूर-दूर तक फैली हुए थी। इसलिए वो परेशान व्यक्ति अपनी समस्या को लेकर उस महात्मा के पास गया और बोला- गुरुजी मैं अपने बेटे की बुरी आदतों से बहुत परेशान हूँ, तो उस महात्मा ने उससे कहा ठीक है तुम अपने बेटे को लेकर सुबह बगीचे में आ जाना। दोनों पिता-पुत्र अगले दिन बगीचे में पहुँचे तो महात्मा ने उस व्यक्ति के बेटे से कहा चलो बगीचे की सैर करते हैं तो वो बगीचे की सैर करने लगे। थोड़ी दूर चलने के बाद महात्मा अचानक रुक गये और उस लड़के से कहने लगे कि क्या तुम ये छोटा सा पेड़ उखाड़ सकते हो? तो इस पर उस लड़के ने महात्मा से कहा- 'हाँ क्यों नहीं मैं ये कर सकता हूँ' और उसने बड़ी आसानी से उस पेड़ को उखाड़ दिया।

कुछ दूर और चलने के बाद महात्मा फिर से रुक गये इस बार उन्होंने एक थोड़े से बड़े पेड़ को चुना और उस लड़के से बोले- 'क्या तुम इस पेड़ को उखाड़ सकते हो?' तो उस लड़के ने कहा- 'हाँ क्यों नहीं' और उसने उसे उखाड़ना शुरू कर दिया। लेकिन इस बार उसे थोड़ी मेहनत लगी फिर भी उसने मजे-मजे से उस पेड़ को उखाड़ दिया। इस पर महात्मा थोड़े और आगे बढ़े और आगे जाकर वो फिर एक मजबूत गुडहल के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहने लगे कि- 'क्या तुम इसे उखाड़ सकते हो?' तो इस पर लड़के ने उसके तने को पकड़कर उसे उखाड़ना चाहा लेकिन बहुत जोर लगाने के बाद भी वो इस पेड़ को उखाड़ नहीं पाया। क्योंकि वो पेड़ बहुत मजबूत था। वह लड़का बोला कि- 'अरे यह तो बहुत मजबूत है इसे उखाड़ना तो असम्भव है।'

इस पर महात्मा बोले ठीक इसी तरह जब कोई बुरी आदत नई-नई हमें लगती है तो हमें लगता है कि वो हमसे छूट जाएगी लेकिन जैसे-जैसे वो पुरानी होती जाती है हमारे लिए उसे छोड़ पाना बड़ा ही मुश्किल होता जाता है। इसलिए बुरी आदत चाहे नयी हो या पुरानी उसे छोड़ देने में ही भलाई है ।

साभार- अन्तर्जाल
प्रस्तुति- भवानीदास आर्य, मन्त्री न्यास

स्मृतिशेष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की ११वीं पुण्य स्मृति में

सारस्वत काव्य संध्या का भव्य आयोजन

श्रोताओं से खचाखच भरा माता लीलावन्ती सभागार

काव्य रस की धारा में श्रोताओं ने जी भर का किया स्नान

सदा अहिंसा सर्वोत्तम मन की कस्तूरी है, दुष्ट नहीं माने तो हिंसा बहुत जरूरी है -सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली

यह दुर्ग है ऋषि दयानन्द का, यहाँ वेद का डंका बजता है -संजय सत्यार्थी, पटना (बिहार)

नवनीत आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ

पीयूष बन्धु द्वारा भजन प्रस्तुति

श्री अशोक आर्य द्वारा स्वामी सुमेधानन्द जी का सम्मान

श्री भवानीदास आर्य द्वारा स्वामी ओमु आनन्द जी का सम्मान

श्री पी. एन. जायसवाल द्वारा सारस्वत मोहन मनीषी जी का सम्मान

श्री भँवरलाल आर्य द्वारा श्री संजय सत्यार्थी जी का सम्मान

श्री भँवरलाल गर्ग द्वारा श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी का सम्मान

श्री अमृतलाल तापड़िया द्वारा श्री त्रिभुवन जी का सम्मान

मंच पर विराजमान सम्माननीय अतिथिगण

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी द्वारा काव्य पाठ

श्री संजय सत्यार्थी द्वारा काव्य पाठ

मंच पर विराजमान सम्माननीय अतिथिगण

उपस्थित श्रोतागण

उपस्थित श्रोतागण

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती द्वारा उद्बोधन

हलचल

आर्यसमाज, चांपानेरी (अजमेर)

१८वाँ वार्षिक महोत्सव ग्राम चांपानेरी, जिला-अजमेर (राज.)

आर्य समाज की युवा इकाई एवं आर्यवीर दल चांपानेरी के द्वारा दिनांक १४, १५ व १६ मई में। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक होशंगाबाद (म.प्र.) के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उच्चकोटि के भजनोपदेशक कुलदीप जी आर्य बिजनौर (उ.प्र.) व उनके सहयोगी उपस्थित थे। पूर्णाहुति १६ मई त्रयोदशी शनिवार सायं ४.०० बजे हुयी। - प्रह्लाद मार्की, मंत्री

ऋग्वेद पारायण यज्ञ दिनांक २३ से ३० अगस्त २०१५

आर्य समाज हिरणमगरी, सेक्टर-४, उदयपुर की ओर से २३ से ३० अगस्त २०१५ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए आर्य समाज के प्रधान भँवर लाल आर्य ने बताया कि इस ऋग्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री होंगे। आचार्य जी के साथ आर्य कन्या गुरुकुल, सासनी (हाथरस) की ब्रह्मचारिणियाँ वेदपाठी होंगी। - रामदयाल मेहरा, प्रचार मन्त्री

संस्कृत संगीत संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह सोल्लास सम्पन्न

अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आर्यसमाज बी- २ जनकपुरी में विश्वशान्ति महायज्ञ, संस्कृत संगीत भजन संध्या एवं सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया। यज्ञोपरान्त स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि यज्ञ करने वाले का घर अत्यन्त मनोहर, धनधान्य से परिपूर्ण, हितकारी एवं रमणीय होता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरुण सहारन ने की तथा इसके विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, पद्मश्री डॉ. रमाकान्त शुक्ल एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार थे। समारोह का आयोजन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के सान्निध्य में हुआ।

अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति के वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि विज्ञान, कला, संस्कृति और साहित्य सबके विकास के लिए है। संस्कृत भाषा कामधेनु के समान है। संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। शब्द निर्माण की समस्या का समाधान संस्कृत में है। संस्कृत भाषा, साहित्य, भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकता के बिना न तो आत्मिक शान्ति संभव है, न विश्वशान्ति ही। - सूर्यकान्त मिश्र, सह संपादक

वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज डोहरिया, तह. शाहपुरा, जिला- भीलवाड़ा की ओर से दिनांक २८ जून २०१५ से ३० जून २०१५ तक वृष्टियज्ञ का आयोजन किया गया। भजन एवं उपदेश का कार्य पं. अमर सिंह जी विद्या वाचस्पति, ब्यावर के द्वारा किया गया। रहड़ गाँव में अच्छी वर्षा हुई और किसानों ने खरीफ की फसल की बुवाई कर दी है। श्री विजय कुमार जी शर्मा प्रधान आर्यसमाज, भीलवाड़ा ने अपनी ओर से ३१०० रु. व संस्था की ओर से २१०० रु. प्रदान किये। - कन्हैयालाल साहू, भीलवाड़ा

प्रतिस्वर

श्री अशोक जी, यथायोग्य नमस्ते

सत्यार्थ सौरभ में आपके अग्रलेख विविध विषयों पर उपयोगी तथा सराहनीय चल रहे हैं। कई वार एक ही अंक में दो से अधिक हो जाते हैं। जून अंक में श्री शिवनारायण उपाध्याय के लेख से एक अपेक्षित पक्ष जहाँ पुष्ट हुआ, वहाँ पुंसवन पर व्यापक, तुलनात्मक विचार की अपेक्षा सामने आती है। इसी अंक में प्रकाशित मन्त्र 'इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्। क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे' शब्दों द्वारा लिंग समानता का निर्देश विशेष संकेत योग्य है। 'वेद में ऐतिहासिक नाम' लेख भी आकांक्षा करता है, इसका पूर्ण उत्तर हो। इन माने जाने वाले-नाम शब्दों से सम्बद्ध विशेषणादि वहाँ मन्त्रों में क्यों नहीं है? क्रिया भी इतिहास का निर्देश नहीं करती है? जबकि रामायण वेद को पूर्ववर्ती कहती है। मन्त्रकर्त्ता (?) ने स्पष्ट संकेत क्यों नहीं किया? जिससे प्रत्येक बात जबरदस्ती निकालनी पड़ती है। ऐसे अनुषंगिक लेखों की अपेक्षा यदा-कदा सामने आती है। अच्छा हो आर्य समाज का अच्छे स्तर का यहाँ शोध-संगठन हो। कृपया आप सम्पादकीय में ऐसे बिन्दु उठायें। - भद्रसेन, होशियारपुर

शुभ सूचना 'आर्यन अभिनंदन समारोह'

सभी आर्य संन्यासी, विद्वान्, महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशक, ढोलक वादक जिनकी आयु ६० वर्ष या उससे अधिक है, आमन्त्रित हैं। हम उन सबका अभिनन्दन करेंगे। कृपया अपना परिचय निम्न पते पर भेजें।

नोट- केवल वे ही सज्जन लिखें जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के लिए लगाया है। कहीं अध्यापक या अन्य कोई नौकरी या कार्य नहीं किया हो। **समारोह का विवरण**- अध्यक्षताः स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

स्थान- गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली

समय- प्रातः ६ बजे से १ बजे तक

दिनांक- १६ सितम्बर, शनिवार, २०१५

सम्पर्क- ठाकुर विक्रम सिंह

पता- A-41, IInd तल, लाजपत नगर पार्ट II,
निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- ११००२४,
फोनः ०११-४५७६११५२/०११-२६८४२५२७

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १६** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रामनारायण कुशवाहा (देवली वाले); कोटा, अन्नू आर्या (पुत्री- श्री संजय आर्य); सोनीपत, श्री पुरुषोत्तम सिंह राठौड़; विजयनगर, डॉ. एस. के. माहेश्वरी; उदयपुर, श्री विजय कुमार बाघेला; हनुमानगढ़, श्री वेदप्रकाश दलाल; भिवानी, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा; अलवर, श्री ईश्वर सिंह; चूरु, श्री संदीप कुमार राय; बीकानेर, श्री राजेश कुमार (नवादा); बिहार। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

वृक्क (Kidney)-शरीर के महत्वपूर्ण अंग

सामान्यतया व्यवहार में हम अनेक प्रकार की ऐसी क्रियाएँ करते हैं अथवा अपेक्षित सावधानी नहीं बरतते जिनसे हमारे किडनी को नुकसान पहुँचता है और जब तक हमें यह एहसास होता है या डॉक्टर द्वारा निदान किया जाता है कि हमारे किडनी डैमेज हो चुके हैं तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। हमारे किडनी वस्तुतः अत्यन्त आश्चर्यजनक अंग हैं जो शरीर में श्रमपूर्वक कार्य करते रहते हैं। किडनी के द्वारा पोषक तत्वों का ग्रहण किया जाता है, अनेक हॉर्मोन्स स्रवित होते हैं। पर सबसे बड़ी बात हमारे खून में जो जहरीले तत्व प्रविष्ट हो जाते हैं उनको छानकर हमारे किडनी मूत्र के माध्यम से निकाल देते हैं और शरीर में अम्ल और क्षारीय स्थिति के परिमाण को यथोचित बनाये रखते हैं। इसलिए हमें चाहिए कि हम रोजमर्रा की जिन्दगी में अपने इन महत्वपूर्ण अंगों की सुरक्षा के बारे में सोचें। यहाँ कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बिन्दु अंकित किए जा रहे हैं जिनको अपने दैनिन्दिन जीवन से दूर करने पर/अपनाने पर हमारे किडनी की सुरक्षा हो सकती है:-

१.सोडा- ओसाका यूनिवर्सिटी जापान के कर्मचारियों पर एक शोध किया गया जिसमें निष्कर्ष निकला कि एक दिन में दो या दो से अधिक सोडा पेय पदार्थ पीने पर किडनी की बीमारियों की रिस्क बहुत ज्यादा हो गई। इस शोध में बारह हजार लोगों को शामिल किया गया और पाया गया कि जो लोग सोडा की अधिक मात्रा का सेवन करते हैं उनके मूत्र में प्रोटीन उपस्थित था जो कि किडनी के विनष्ट होने का प्रथम चिह्न माना जाता है। यदि शीघ्र पता चल जाये तो समुचित इलाज के द्वारा इसे दूर किया जा सकता है। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि सोडा पेय को अपने खाने-पीने की आदतों से दूर करके हम इस खतरे को रोक सकते हैं।

२.विटामिन बी-६ की कमी- मेरीलैण्ड यूनिवर्सिटी में किए गए एक शोध के अनुसार विटामिन बी-६ का हमारे शरीर में होना किडनी के लिए आवश्यक है। बी-६ की कमी होने से किडनी के अन्दर पथरी बनने की संभावना बढ़ जाती है। किडनी की समुचित क्रिया के लिए एक व्यक्ति के भोजन में प्रतिदिन कम से कम १.३ मिलीग्राम विटामिन६ का होना आवश्यक है। आलू, आदि ऐसे खाद्य पदार्थ और सब्जियाँ जिनमें स्टार्च ज्यादा होती है और ऐसे फल जिनमें खटास नहीं होती वे विटामिन बी-६ के अच्छे स्रोत माने जाते हैं।

धूम्रपान- ऐण्डोथिलियल सेल वे माने जाते हैं जो कि हमारी धमनियों की दीवारों पर चिपककर उसे कठोर और संकरा कर देते हैं जिससे कि हर अंग को जाने वाले खून की धारा में प्रेशर भी ज्यादा होता है और कमी भी हो जाती है। 'क्लीनिकल फार्मेकॉलोजी एंड थिरेप्यूटिक्स' में प्रकाशित एक लेख के अनुसार केवल दो सिगरेट प्रतिदिन पीने वाले व्यक्ति में ये एण्डोथिलियल सैल दुगुने हो जाते हैं। अतः सिगरेट पीने के नुकसान हमें समय रहते समझ लेने चाहिए। 'जर्नल ऑफ अमेरिकन सोसायटी ऑफ नेफ्रोलॉजी' में भी इस तथ्य को पुष्ट किया गया है।

४. व्यायाम का अभाव- यदि आप अपने किडनी की सुरक्षा करना चाहते हैं तो थोड़ा बहुत व्यायाम प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए। सन् २०१३ में 'जर्नल ऑफ अमेरिकन सोसायटी ऑफ नेफ्रोलॉजी' में प्रकाशित शोध के अनुसार अधिक आयु की महिलाएँ जो नित्य प्रतिदिन व्यायाम करती हैं उनमें पथरी की संभावनाएँ काफी कम हो जाती है।

५. मेग्निशियम की कमी- मेग्निशियम एक ऐसा तत्व है जो हमारे शरीर में कैल्सियम को अवशोषित करता है। अगर हमारे शरीर में मेग्निशियम की मात्रा कम हो जाती है तो कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाने से पथरी होने की संभावना प्रबल हो जाती है। इसके लिए पत्तेदार सब्जियाँ, बीज, नट्स और बीन्स अपनी खुराक में अवश्य शामिल करने चाहिए। ताजा नाशपाती जैसे फल मेग्निशियम के अच्छे स्रोत हैं।

६. अनिद्रा- हमें जितनी अच्छी नींद आती है, हमारी किडनी को उतना ही आराम मिलता है। 'साइन्स डेली' नामक पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार जिनको

अनिद्रा रोग होता है उनको किडनी का रोग ज्यादा होने की संभावना है। डॉक्टर माइकल सोल जो कि टोरन्टो विश्वविद्यालय में हृदय रोग विशेषज्ञ हैं उनका कहना है कि रात्रि में जब हम विश्राम करते हैं तो किडनी के टिश्यू भी नये होते रहते हैं। अतः अनिद्रा रोग का सीधा-सीधा असर किडनी को डैमेज करने में होता है।

७. समुचित मात्रा में पानी का न पीना- यह बहुत आवश्यक है कि हमारे किडनी हाइड्रेटेड अवस्था में रहें। अगर हम समुचित मात्रा में पानी नहीं पीते हैं तो जहरीले तत्व इसलिए इकट्ठे होना आरम्भ हो जाते हैं क्योंकि उनको पानी के द्वारा किडनी तक पहुँचाने में बाधा आ जाती है। 'राष्ट्रीय किडनी संस्थान' की सिफारिश है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन १० से १२ गिलास पानी पीना ही चाहिए। अगर आपका मूत्र साफ और हल्के रंग का है तो समझा जा सकता है कि आप पर्याप्त पानी पी रहे हैं।

८. समय पर लघुशंका करना- जब कभी भी लघुशंका की इच्छा हो तो उसे दबाना नहीं चाहिए। अगर नियमित रूप से इस मूत्र वेग को दबाया जाता रहा तो इससे किडनी पर दबाव पड़ता है जिससे उसे नुकसान पहुँचता है।

९. नमक की अधिकता- जब हम नमक अधिक मात्रा में प्रयोग करते हैं तो उससे ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है और सीधे-सीधे किडनी पर दुष्प्रभाव डालता है। आदर्श रूप में प्रतिदिन छह ग्राम से अधिक नमक नहीं खाना चाहिए।

१०. कैफीन की अधिकता- कॉफी, चाय, सौफ्ट ड्रिंक सोडा इन सभी के माध्यम से कैफीन हमारे अन्दर पहुँचती है। इससे भी ब्लड प्रेशर बढ़ता है और किडनी पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

११. दर्द निवारक गोलियों की अधिकता- जब कभी भी हमें कहीं दर्द होता है तो हम तुरन्त कोई दर्द निवारक दवा ले लेते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रकार कोई भी दवा लेने से पहले कई बार सोचना चाहिए क्योंकि साइड इफेक्ट के रूप में हमें खराब किडनी प्राप्त होती हैं।

१२. आवश्यक दवाओं का न लेना- किसी भी व्यक्ति को जिनको उक्त रक्तचाप अथवा टाइप२ डायबिटीज है अगर वे इनको नियंत्रित करने के लिए प्रशिक्षित चिकित्सक की सलाह के अनुसार दी गई दवाएँ नहीं लेता है और इस प्रकार उसका ब्लड प्रेशर व डायबिटीज नियंत्रण में नहीं रहती हैं तो किडनी डैमेज सुनिश्चित है।

१३. अत्यधिक प्रोटीन सेवन- प्रायः यह समझा जाता है कि उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रोटीन अधिकाधिक लेना चाहिए। परन्तु कहा है कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत'। 'हावर्ड विश्वविद्यालय' में हुए एक शोध के अनुसार जब हम अधिक मात्रा में प्रोटीन लेते हैं तो उपउत्पाद के रूप में अमोनिया बनती है। अमोनिया एक जहरीला तत्व है और इसको निष्प्रभावी करने के लिए पहले से ही कठिन कार्य कर रहे किडनी को और भी ज्यादा कार्य करना पड़ता है, जिससे किडनी खराब होने की संभावनाएँ पैदा हो जाती हैं।

१४. सामान्य इन्फेक्शन का इलाज नहीं करवाना- कई बार जुकाम आदि सामान्य बीमारी जब हमें होती हैं तो हम उनका इलाज करवाने में लापरवाह रहते हैं। कई शोधों के परिणामों में पाया गया है कि जो लोग इन सामान्य बीमारियों का इलाज नहीं करवाते, उचित आराम नहीं करते, उनके किडनी के खराब होने की संभावना बढ़ जाती है।

१५. एल्कोहल का अत्यधिक सेवन- एल्कोहल के दुष्प्रभाव शरीर पर क्या-क्या होते हैं इससे प्रायः सभी परिचित हैं। 'किडनी हेल्थ आस्ट्रेलिया' व 'अमेरिकन

किडनी फण्ड' के अनुसार जो लोग किडनी फेल होने से बचना चाहते हैं उन्हें या तो एल्कोहल सेवन नहीं करना चाहिए या करें तो अल्प मात्रा में करना चाहिए।

ये कुछ बिन्दु हैं जिनका ध्यान रखने से हम हमारे बहुत ही महत्वपूर्ण अंग किडनी की देखरेख भली प्रकार से कर सकते हैं।

यह आलेख हमें email से प्राप्त हुआ था। उपयोगी जानकर यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। अंग्रेजी के इस आलेख का भाषानुवाद हमने किया है। प्रेषक के प्रति आभार। -संपादक

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव जीवन यात्रा

''संन्यासाश्रम''

का चतुर्थ एवं अन्तिम पड़ाव संन्यासाश्रम है।

संन्यासी का धर्म अर्थात् करणीय कर्त्तव्य और दिनचर्या

सत्यार्थ प्रकाश के पंचम समुल्लास और अन्य शास्त्रों में संन्यासाश्रम में संन्यासी का धर्म अर्थात् करणीय कर्त्तव्य और दिनचर्या का विस्तार से उल्लेख किया है। संक्षेपतः-

(१) सदा छना हुआ शुद्ध जल पिये, सदा सत्य बोले, नीचे दृष्टि रख के चले।

(२) कोई अपमान कर भी दे तो भी क्रोध न करे तथा सदैव कल्याणार्थ सदुपदेश ही करे।

(३) किसी भी प्राणी को पीड़ा न देता हुआ सर्वत्र विचरे।

(४) उपदेश व संवाद (वाद-विवाद) के दौरान कोई संन्यासी पर क्रोध करे अथवा निन्दा करे तो संन्यासी उस पर क्रोध न कर सदैव उसके हित में ही बोले।

(५) संन्यासी सदैव मद्य मांसादि से दूर रहे।

(६) केश, नख, दाढ़ी, मूँछ का छेदन करवाता रहे। इस संदर्भ में एक प्रेरक घटना सामने आती है।

सन् १८७३ में बड़ौदा में महर्षि दयानन्द एक दिन क्षौर करवा रहे थे। एक पण्डित ने आकर कहा कि संन्यासियों का धर्म तो त्याग है, आप देह-विभूषा में क्यों लगे हैं? स्वामीजी ने उत्तर दिया कि यदि बाल बढ़ाने में ही त्याग है तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी है। यह कहकर उसे उपदेश दिया कि देह की रक्षा के लिए उसे सँवारना पाप नहीं है।''

(७) सदैव कुसुम्भ (गेरूआ) आदि से रंगे हुए, सिले हुए वस्त्र पहिने और कामादि दोषों से दूर रहकर ब्रह्मचर्य का धारण करे।

(८) केवल दण्ड, कमण्डलु और काषाय वस्त्र धारण करना ही संन्यासी का लक्षण नहीं है अपितु पुत्रेषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा से रहित होकर सब मनुष्यादि प्राणियों को सत्योपदेश और विद्यादान करते हुए योगाभ्यास द्वारा मोक्ष प्राप्त करना ही संन्यासी का मुख्य कर्म है। अर्थात् बाह्य चिह्नों से संन्यासी न दिखकर अपने आचरण व व्यवहार से संन्यासी दिखना चाहिए।

(९) यद्यपि मनु प्रतिपादित दश लक्षणों वाले धर्म का पालन करना समस्त आश्रमियों के लिए आवश्यक है तथापि संन्यासियों के लिए विशेष है।

(१०) असली संन्यासी वही है जो सब भावों अर्थात् पदार्थों में निःस्पृह आकांक्षारहित भीतर और बाह्य व्यवहारों में शुद्ध और पवित्र हो।

(११) संन्यासियों को नित्यप्रति प्राणायामों से आत्मा, अन्तःकरण और इन्द्रियों के दोष, धारणाओं से पाप, प्रत्याहार से संग दोष, ध्यान से अनीश्वर के गुणों अर्थात् हर्ष शोक अविद्यादि जो जीव के दोष हैं उन्हें सदैव भस्मीभूत करते रहना चाहिए।

(१२) संन्यासी ओंकार पूर्वक सप्तव्याहृतियों से विधिपूर्वक प्राणायाम जितनी शक्ति हो उतने करें परन्तु न्यून से न्यून तीन प्राणायाम तो संन्यासी को अवश्य करने ही चाहिए।

(१३) संन्यासी को भविष्यवाणी करके और शकुनाशकुन बताकर अर्थात् फलित ज्योतिष का प्रयोग करके भिक्षा नहीं माँगनी चाहिए अर्थात् संन्यासी को अंधविश्वासों का प्रचार नहीं करना चाहिए।

(१४) 'परोपकारार्थ सतां विभूतय' सन्तों का जीवन परोपकार के ही निमित्त है यह महर्षि दयानन्द का दृढ़ निश्चय था। उनके व्यक्तित्व, उपदेशों व कृतित्व में इसकी पुष्टि जगह-जगह होती है। संन्यास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणा- कि संन्यासी से कुछ भी कर्त्तव्य कर्म अपेक्षित नहीं है, के ऋषि दयानन्द घोर विरोधी थे। निम्न विवरण संक्षेप में इस पर प्रकाश डाल सकेगा।

महर्षि ने एकादश समुल्लास में लिखा है- 'धर्म की प्रवृत्ति विशेष हो और जनहित करने में आवे, इसलिए यह संन्यास आश्रम है।' संन्यासी के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में स्वामी जी ने अनेकत्र उनके परोपकार में प्रवृत्त रहने का निर्देश किया है- 'संन्यासी को उचित है कि सारे जगत् में घूमे और सदुपदेश करे, यही उसका मुख्य कर्त्तव्य कर्म है। पंचशिख और शंकराचार्य का जीवन देखो। उन्होंने सदा सदुपदेश ही किये हैं।'

'उपदेश कर अधर्म की निवृत्ति करना यह संन्यासियों का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है। .....मूढ़ लोग जनपद में दुराचार करके किसी आपत्ति में पड़ेंगे, सो उन्हें सदाचरण की ओर लगाना, यही चतुर्थाश्रमधारी ज्ञानी पुरुष का मुख्य काम है।'

पूना में प्रवचन करते हुए महर्षि ने कहा था- 'संन्यासियों का मुख्य कर्म यही है कि सब गृहस्थ आदि आश्रमों को सब प्रकार से व्यवहारों का सत्य निश्चय करा अधर्म व्यवहारों को छुड़ा, सब संशयों का छेदन कर सत्यधर्मयुक्त व्यवहारों में प्रवृत्त कराया करें। संसार को एक ओर रखके अध्ययन, उपदेश और लोक-कल्याण करने में जो सम्पूर्ण समय लगाया जावे, वह संन्यास है। गृहस्थियों को इन सब कार्यों को करने का समय नहीं मिलता और संन्यासियों को अवकाश बहुत मिलता है, बस यही मुख्य भेद है।'

सम्पादक- अशोक आर्य

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख